छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—दिसम्बर, 2012

कक्षा-10वीं

विषय-अर्थशास्त्र

सेट-1

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक-100**

निर्देश— (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) सभी प्रश्नों के अंक प्रश्नों के सामने अंक विभाजन के साथ अंकित हैं।
(iii) प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक बहुविकल्पीय, 6 से 10 तक खाली स्थान 11 से 15 सत्य/असत्य एवं 16 से 22 तक एक शब्द/वाक्य के प्रश्न हैं।
(iv) प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 50-60 शब्द हैं।
(v) प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 150-200 शब्द हैं।

निर्देश—सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. उत्पादन के साधन हैं—
(a) भूमि और पूँजी (b) श्रम और संगठन
(c) साहसी (d) इनमें से सभी।
उत्तर—(d) इनमें से सभी।

2. किसी सहकारी समिति में सदस्यों की न्यूनतम संख्या होती है—
(a) 5 (b) 10 (c) 15 (d) 20.
उत्तर—(b) 10.

3. 'विश्व व्यापार संगठन' की स्थापना की गई—
(a) 1 जनवरी, 1993 (b) 28 फरवरी, 1993
(c) 31 दिसम्बर, 1993 (d) 1 जनवरी, 1994।
उत्तर—(a) 1 जनवरी, 1993.

4. SISRY का पूरा नाम है—
(a) स्वच्छ जल संग्रहण रोजगार योजना
(b) स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना
(c) जवाहर राष्ट्रीय सामाजिक सहायता योजना
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
उत्तर—(b) स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना।

5. 'राष्ट्रीय जननी सुरक्षा योजना' का उद्देश्य है—

(a) गर्भवती महिलाओं का पंजीयन
(b) नि:शुल्क चिकित्सा सुविधा
(c) पुत्र जन्म पर 500 रुपये एवं पुत्री जन्म पर 1,000 रुपये सहायता
(d) उपर्युक्त सभी।
उत्तर—(d) उपर्युक्त सभी।
निर्देश—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

6. .....परिवहन को राष्ट्र की जीवन रेखा कहा जाता है। (रेल/बस)
उत्तर—रेल।

7. उत्पादन के विभिन्न साधनों का स्वामी.....होता है। (परिवार/साहसी)
उत्तर—साहसी।

8. खरीदारी एक विशुद्ध.....क्रिया है। (आर्थिक/अनार्थिक)
उत्तर—आर्थिक।

9. हमारी आवश्यकताएँ.....होती हैं। (सीमित/अनंत)
उत्तर—अनंत।

10. महाविद्यालय के शिक्षक के लिए कार एक.....की वस्तु है। (विलसिता/सुविधा)
उत्तर—सुविधा।

निर्देश—सत्य/असत्य वाक्यों का चयन कीजिए—

11. लाभ श्रमिक कमाता है।
उत्तर—असत्य।

12. विज्ञापन वस्तु के गुणवत्ता के विषय में जानकारी देता है।
उत्तर—सत्य।

13. विक्रेताओं का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है।
उत्तर—सत्य।

14. एकाधिकारी बाजार में क्रेता एवं विक्रेताओं की संख्या असंख्य होती है।
उत्तर—असत्य।

15. युद्ध की आशंका से आवश्यक वस्तु की माँग में वृद्धि होगी।
उत्तर—सत्य।

निर्देश—एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए—

प्रश्न 16. बचत का अर्थ है।
उत्तर—प्राप्त आय का उपभोग करने के पश्चात् जो राशि शेष बचता है उसे बचत कहते हैं।

प्रश्न 17. बीमा अनुबंध के दो पक्ष के नाम लिखिए।
उत्तर—बीमाकर्ता एवं बीमाधारी बीमा अनुबंध के पक्षकार होते हैं।

प्रश्न 18. प्रति व्यक्ति आय ज्ञात करने का सूत्र लिखिए।
उत्तर—प्रति व्यक्ति आय ज्ञात करने का सूत्र—

प्रति व्यक्ति आय = राष्ट्रीय आय/जनसंख्या

प्रश्न 19. ध्वनि प्रदूषण का मात्रक है।

उत्तर—साउण्ड लेबल मीटर।

प्रश्न 20. धूम्रपान से होने वाले कोई दो रोग का नाम लिखिए।

उत्तर—धूम्रपान से टी. वी. तथा कैन्सर होता है।

प्रश्न 21. खरीदारी का एक उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—वस्तुओं एवं सेवाओं को उपभोग के उद्देश्य से खरीदा जाता है।

प्रश्न 22. नौकरी पेशा वर्ग के व्यक्ति किस प्रकार का बैंक खाता खोलते हैं ?

उत्तर—नौकरी पेशा वर्ग के लोग बचत खाता खोलते हैं।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर **4 अंक** आबंटित है। उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 23. माता-"ता द्वारा बच्चों का लालन-पालन किस सेवा के अंतर्गत आता है, कारण सहित स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—माता-पिता द्वारा बच्चों का लालन-पालन नि:शुल्क सेवा के अंतर्गत आता है। यह माता-"ता की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता होती है। माता-"ता तथा बच्चों के बीच परिवारिक प्रेम होता है। जिसके कारण एक परिवार के बच्चों का लालन-पालन उनके पालकों अर्थात् माता-"ता के द्वारा किया जाता है।

अथवा

प्रश्न—"उत्पादन उपभोग और निवेश परस्पर जुड़े होते हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—मनुष्य की आवश्यकताएँ अनंत होती हैं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं में उपयोगिता का सृजन किया जाता है। वस्तुओं को उत्पादित करने का मुख्य उद्देश्य उनका उपभोग करना होता है। उत्पादन तथा उपभोग एक सतत् प्रक्रिया है। अत: उत्पादकों को भविष्य में उपभोग के लिए वस्तुओं का संग्रहण करना पड़ता है। संग्रहित उत्पाद में निवेश स्वत: ही निहित हो जाता है। अत: हम यह कह सकते हैं कि उत्पादन, उपभोग और निवेश परस्पर जुड़े होते हैं।

प्रश्न 24. 'उत्पादन में वृद्धि' को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—उत्पादन में वृद्धि के दो पक्ष होते हैं। पहला यह कि उत्पादित वस्तुओं की संख्या या मात्रा में वृद्धि हो। दूसरा यह कि उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार हो अथवा उत्पादित वस्तुएँ पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी हो। पहले पक्ष को हम उत्पादन में परिणात्मक वृद्धि का नाम देते हैं। दूसरा पक्ष उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि को दर्शाता है।

उदाहरणार्थ—एक साइकिल उत्पादक कंपनी ने वर्ष 2000 में कुल 500 साइकिलों का निर्माण किया। यदि वर्ष 2001 में यह कंपनी 700 साइकिलों का उत्पादन करे तो हम कहेंगे कि उत्पादन में परिणात्मक वृद्धि हुई है अर्थात् साइकिलों का उत्पादन बढ़ गया है।

अथवा

प्रश्न—उत्पादन को कैसे बढ़ाया जा सकता है? लिखिए (कोई चार)

उत्तर—निम्न तरीके से उत्पादन में वृद्धि किया जा सकता है—

1. आधुनिक यंत्रों और बेहतर तकनीक के उपयोग द्वारा उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

2. उत्पादन में वृद्धि हेतु पूँजीगत पदार्थों का उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

3. आधुनिक मशीनों को चलाने के लिए कुशल एवं प्रशिक्षित श्रमिकों एवं कर्मचारियों की भर्ती की जानी चाहिए।

4. बिजली, पानी, परिवहन आदि सुविधाओं की उपलब्धता उत्पादन वृद्धि में सहयोग प्रदान करती है।

प्रश्न 25. बड़े पैमाने के उद्योगों से होने वाले कोई चार लाभ लिखिए।

उत्तर—बड़े पैमाने के उद्योगों से होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं—

1. अधिक उत्पादन एवं न्यूनतम लागत—बड़े पैमाने के उद्योगों से अधिक उत्पादन होता है जिससे वस्तुओं की निर्माण लागत कम हो जाती है।

2. निर्यात को प्रोत्साहन—बड़े पैमाने के उद्योगों के द्वारा उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। जिससे निर्यात व्यापार को प्रोत्साहन मिलता है।

3. कृषि के विकास में सहायक—इन उद्यागों के द्वारा बड़े पैमाने पर कृषि यंत्रों, ट्रैक्टरों, कटाई-छटाई मशीनों को उत्पादन किया जाता है जो कृषि के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. जीवन-स्तर में सुधार—उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुओं के उपभोग से जनता के जीवन-स्तर में व्यापक सुधार आता है।

अथवा

प्रश्न—लघु औद्योगिक इकाइयों से जुड़े कोई चार लाभ लिखिए।

उत्तर—लघु औद्योगिक इकाइयों से जुड़े प्रमुख लाभ निम्न प्रकार हैं—

1. रोजगार का साधन—इससे स्थानीय ग्रामीण लोगों को रोजगार की प्राप्ति होती है। ये इकाइयाँ मुख्यत: श्रम प्रधान होती हैं।

2. निर्यात में सहायक—लघु उद्योगों के द्वारा उत्पादित वस्तुओं का निर्यात भी किया जाता है।

3. आयात पर क्रम निर्भरता—ये इकाइयाँ देश में उपलब्ध संसाधनों का ही प्रयोग करते हैं। परिणामस्वरूप आयात पर निर्भरता कम हो जाती है।

4. पूरे देश में औद्योगीकरण का प्रसार—लघु उद्योगों की स्थापना दूरस्थ स्थानों एवं ग्रामीण इलाकों में भी की जा सकती है। जिसके कारण देश के कोने-कोने में लघु औद्योगिक इकाइयों की स्थापना होने लगी है।

प्रश्न 26. थोक एवं खुदरा विक्रेता में अंतर समझाइये।

उत्तर—थोक एवं खुदरा विक्रेता में अंतर—

क्र.	अन्तर का आधार	थोक विक्रेता	खुदरा विक्रेता
1.	पूँजी की आवश्यकता	इसे अधिक मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है।	इसे कम पूँजी की आवश्यकता होती है।
2.	सम्बन्ध	इनका उत्पादक या विक्रेता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।	इसका सम्बन्ध थोक विक्रेताओं से होती है।
3.	संख्या	थोक विक्रेताओं की संख्या कम होती है।	इनकी संख्या अधिक होती है।
4.	समीपता	यह उत्पादक के अधिक समीप होता है।	यह उपभोक्ताओं के समीप होता है।
5.	वस्तु की मात्रा	यह बड़ी मात्रा में वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हैं।	ये थोड़ी-थोड़ी मात्रा में वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते

अथवा

प्रश्न—"रेल एवं सड़क परिवहन एक-दूसरे के पूरक हैं।" समझाइये। (कोई चार बिन्दु)

उत्तर—"रेल एवं सड़क परिवहन एक-दूसरे के पूरक हैं।" इसका कारण निम्नलिखित है—

1. आवागमन तथा माल ढोने में रेल एवं सड़क परिवहन एक-दूसरे की मदद करते हैं।

2. गाँवों को नगरों से सड़क द्वारा और बड़े-बड़े नगरों को रेल तथा सड़क दोनों से जोड़ा गया है।

3. सड़कें आंतरिक तथा ग्रामीण क्षेत्रों को रेलों से जोड़ती हैं।

4. रेलों पर सवारी तथा समान पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य सड़क परिवहन द्वारा होता है।

5. सड़कों का विकास रेलों के सहायक के रूप में तथा रेलों का विकास सड़कों के सहायक के रूप में किया गया है।

प्रश्न 27. वस्तु विनिमय व्यवस्था के दोष लिखिए। (कोई चार)

उत्तर—वस्तु विनिमय के दोष—

1. दोहरे संयोग का अभाव—वस्तु विनिमय में दोहरे संयोग की समस्या होती है। **जैसे** किसी किसान को चावल के बदले में कपड़े की आवश्यकता होती है तो उसे ऐसे व्यक्ति की तलाश करनी पड़ती है जिसे कपड़े के बदले में चावल की आवश्यकता हो।

2. मूल्य मापक का अभाव—जुलाहा और किसान अपनी-अपनी वस्तुओं का विनिमय करना चाहते हैं किन्तु वह यह कैसे निश्चित करेंगे कि कितने कपड़े के बदले में कितना चावल

दिया जाये।

3. अविभाज्यता—यदि एक व्यक्ति बकरी के बदले में दो अलग-अलग व्यक्तियों से गेहूँ और कपड़ा लेना चाहता है तो बकरी को दो भागों में विभाजित नहीं कर सकता है। अत: कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिसमें विभाज्यता का गुण नहीं होता है।

4. मूल्य संग्रहण का अभाव—शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं **जैसे**—दूध, सब्जियाँ, माँस, मछली आदि को लंबे समय तक संग्रहीत करके नहीं रखा जा सकता है। अत: इन वस्तुओं के मूल्य में संग्रहण का अभाव पाया जाता है।

अथवा

प्रश्न—भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र के कोई चार घटक लिखिए।

उत्तर—भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र में मुख्यत: जलवायु और भूमि से सम्बन्धित तथ्यों को सम्मिलित किया जाता है। इसके मुख्य घटक निम्नलिखित हैं—

1. कृषि—भारत एक कृषि प्रधान देश है। राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग हमें कृषि से ही प्राप्त होता है।

2. वान्यिकी और लट्ठे बनाना—वनोपज से अनेक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। जिसके निर्यात से हमें विदेशी आय की प्राप्ति होती है।

3. मत्स्य पालन—मत्स्य पालन भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र का महत्वपूर्ण तत्व है।

4. खनन एवं उत्खनन—यह भारतीय अर्थव्यवस्था को गति एवं विकास प्रदान करता है।

प्रश्न 28. विक्रेताओं के किन्हीं दो उद्देश्यों को बताइये।

उत्तर—विक्रेताओं के उद्देश्य—

1. अधिकाधिक लाभ कमाना—विक्रेताओं का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय के द्वारा अधिकाधिक लाभ कमाना होता है।

2. अधिकतम विक्रय करना—प्रत्येक विक्रेता का मुख्य उद्देश्य अधिक-से-अधिक वस्तुओं का विक्रय करना होता है ताकि उसके द्वारा अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके।

अथवा

प्रश्न—बाजार की प्रमुख दो विशेषताओं को समझाइये।

उत्तर—बाजार की विशेषताएँ—

1. क्रेताओं एवं विक्रेताओं का होना—बाजार में क्रेताओं एवं विक्रेताओं दोनों का होना आवश्यक है इनके अभाव में वस्तुओं का क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता है।

2. एक वस्तु—बाजार में एक ही प्रकार की वस्तु होनी चाहिए। **जैसे**—कपड़े का बाजार, चूड़ी का बाजार, सब्जी का बाजार, अनाज का बाजार आदि।

प्रश्न 29. बचत क्या है? उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—प्राप्त आय का उपभोग करने के पश्चात् जो राशि शेष बचता है उसे बचत कहते

हैं।

उदाहरणार्थ—एक शिक्षक 10,000 रुपये मासिक वेतन प्राप्त करता है। तथा वह महीने में 7,000 रुपये उपभोग पर व्यय करता है। तो शेष राशि 3,000 रुपये बचत कहलाता है।

अथवा

प्रश्न—बैंकों में खोले जाने वाले दो प्रकार के खातों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बैंक खातों के प्रकार—

1. बचत बैंक खाता—यह खाता अधिकांशत: निम्न, मध्यम आय वर्ग के लोगों या नौकरी पेशा लोगों के द्वारा खोला जाता है। यह खाता 500 रुपये की राशि बैंक में जमा करके खोला जा सकता है। इस खाते के संचालन के लिए बैंक कुछ चार्जेस काटती है तथा जमा धन पर कुछ ब्याज भी देती है।

2. सावधिक जमा खाता—इस खाते में एक निश्चित राशि पूर्व निर्धारित अवधि तक के लिए जमा कर दी जाती है। तथा परिपक्वता पर पूर्व निर्धारित ब्याज दर पर ब्याज के साथ मूल धन को लौटाया जाता है।

प्रश्न 30. आर्थिक समस्याएँ क्यों पैदा होती हैं? समीक्षा कीजिए। (किन्हीं दो बिन्दुओं पर)

उत्तर—आर्थिक समस्याओं के पैदा होने के कारण—

1. संसाधनों की सीमितता या दुर्लभता—मानवीय आवश्यकताएँ अनंत होती हैं किन्तु उन्हें पूरा करने के साधन अत्यंत सीमित होती हैं। परिणामस्वरूप आर्थिक प्रगति मंद हो जाती है।

2. असीमित मानवीय आवश्यकताएँ—मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित एवं अनंत होती है। मनुष्य जैसे ही अपनी एक आवश्यकता की पूर्ति करता है तो दूसरी फिर तीसरी उत्पन्न हो जाती है तथा यह क्रम ऐसे ही निरंतर चलता रहता है। इससे आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं।

अथवा

प्रश्न—अर्थव्यवस्था की आधारभूत केन्द्रीय समस्याओं के समाधान में कीमत प्रणाली की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—केन्द्रीय समस्याओं के समाधान में कीमत-प्रणाली की भूमिका—

1. माँग एवं पूर्ति शक्तियों के प्रभाव के कारण कीमतों में उतार-चढ़ाव ही वस्तु और संसाधन बाजारों में संतुलन निश्चित करते हैं। इसे ही कीमत प्रणाली कहते हैं।

2. 'क्या और कितना उत्पादन' के निर्धारण में उपभोक्ता की भूमिका महत्वपूर्ण है। कीमतों के उतार-चढ़ाव के माध्यम से उत्पादकों और संसाधनों के आपूर्तिकर्ताओं को उपभोक्ताओं के निर्णय ज्ञात हो जाते हैं। परिणामस्वरूप उत्पादक उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं जिनकी माँग उपभोक्ता द्वारा की जाती है।

3. 'कैसे उत्पादन हो' इसका निर्धारण उत्पादकों को मध्य प्रतियोगिता द्वारा निश्चित हो जाता है। उत्पादकों के द्वारा सदैव नवीन उत्पादन प्रणालियों को अपनाया जाता है। वे उत्पादन लागत कम करने के लिए सस्ते साधनों का उपयोग करते हैं।

प्रश्न 31. गरीबी रेखा को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—गरीबी रेखा की परिभाषा—"गरीबी रेखा वितरण की रेखा का वह विभाजन बिन्दु है जो कि जनसंख्या का गरीब और गैर-गरीब के रूप में बाँटता है।"

ऐसे लोग जिनकी आय गरीबी रेखा के नीचे है वे गरीब हैं और गरीबी रेखा के ऊपर की आय वाले गैर-गरीब हैं।

भारतीय योजना आयोग के अनुसार—"ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन कुल 2400 कैलोरी तथा शहरी क्षेत्रों में प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 2100 कैलोरी निर्धारित किया गया है यदि कोई व्यक्ति इससे कम पाता है तो उसे गरीबी रेखा के नीचे माना जाता है।"

अथवा

प्रश्न—चक्रीय बेरोजगारी को समझाइये।

उत्तर—चक्रीय बेरोजगारी अर्थव्यवस्था में माँग की कमी के कारण उत्पन्न होती है। विकसित देशों में आर्थिक क्रियाओं में उतार-चढ़ाव का चक्र निरंतर चलते रहता है। गिरावट की दशा में माँग गिरती है। तथा उत्पादन की कमी होती है तथा रोजगार का ह्रास होता है। इसे अल्पकालीन घटनाचक्र माना जाता है। उछाल या चढ़ाव आने पर घटनाचक्र समाप्त हो जाता है। इसे ही चक्रीय बेरोजगारी कहते हैं।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घउत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर **6 अंक** आबंटित हैं। शब्द सीमा 100-150 शब्द।

प्रश्न 32. इच्छा और आवश्यकता में अंतर बताइये। (कोई छः)

उत्तर—इच्छा और आवश्यकता में अंतर—

क्र.	अंतर का आधार	इच्छा	आवश्यकता
1.	आशय	यह किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालसा है।	प्रभावोत्पादक इच्छा ही आवश्यकता है।
2.	व्यक्ति	कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार की इच्छा व्यक्त कर सकता है।	साधन के बिना तथा साधन को त्यागने की तत्परता के अभाव में इच्छा आवश्यकता नहीं बन सकती है।
3.	अनिवार्यता	इच्छा के लिए कोई अनिवार्यता नहीं है।	आवश्यकता के लिए इच्छा, साधन एवं साधन को त्यागने की तत्परता का होना आवश्यक है।
4.	प्रभाव	यह आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित नहीं करती है।	इससे आर्थिक क्रियाएँ प्रभावित होती हैं।
5.	क्रिया का रूप	यह अनार्थिक क्रिया है।	यह आर्थिक क्रिया है।
6.	दशा	इच्छा एक मानसिक दशा है।	आवश्यकता इच्छा की पूर्ति है।

अथवा

प्रश्न—आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करने वाले कारक लिखिए। (कोई छः)

उत्तर—आवश्यकताओं के वर्गीकरण को प्रभावित करने वाले तत्व निम्नलिखित हैं—

1. **आय**—आवश्यकताओं का वर्गीकरण व्यक्ति के आय पर निर्भर करती है। अमीरों तथा गरीबों की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न होती हैं।

2. **समय**—समय परिवर्तन के साथ-साथ विलासिता की वस्तुएँ भी अनिवार्य हो जाती हैं आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व मोबाइल विलासिता की वस्तु थी किन्तु आज यह हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है।

3. **व्यवसाय**—व्यक्ति का व्यवसाय का भी उसकी आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं। **जैसे**—एक फिल्म अभिनेता के लिए विलासितापूर्ण सुविधाओं से युक्त बड़ा वाहन भी आवश्यक प्रतीत होती है।

4. **सामाजिक प्रतिष्ठा**—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हर व्यक्ति समाज में अपनी प्रतिष्ठा कायम करना चाहता है। अतः वह समाज के रीति-रिवाजों तथा प्रथा के अनुसार कार्य करता है। **जैसे**—शादी में दहेज देना भोजन कराना, मृत्यु भोज, श्राद्ध आदि। इससे भी आवश्यकता प्रभावित होता है।

5. **कीमत**—आवश्यकताएँ वस्तुओं के कीमत से भी प्रभावित होती हैं। कम कीमत वाली वस्तुएँ अनिवार्य और आवश्यक होती हैं तथा अधिक कीमत की वस्तुएँ विलासिता पूर्ण मानी जाती हैं।

6. **वातावरण या मौसम**—देश भौगोलिक स्थिति आवश्यकताओं को प्रभावित करता हैं। **जैसे**—ठंडे देश में रहने वाले व्यक्ति के लिए गर्म कपड़े एवं सूट आवश्यक है, वहीं भारतीय व्यक्ति के लिए सूट एवं गर्म कपड़े आरामदायक तथा विलासिता की वस्तुएँ हैं।

प्रश्न 33. उत्पादन के लिए उद्यमी श्रम गहन या पूँजी गहन विधि का उपयोग करेगा, इसे प्रभावित करने वाले तीन कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—श्रम गहन विधि को प्रभावित करने वाले तत्व या विशेषताएँ—

1. **सक्रियता**—श्रम उत्पादन का सक्रिय व आवश्यक साधन है बिना श्रम के उत्पादन नहीं किया जा सकता है।

2. **गतिशीलता**—मनुष्य एक गतिशील प्राणी है। उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। अतः श्रम उत्पादन का गतिशील साधन है।

3. **नश्वर**—यह उत्पादन का नश्वर साधन है। श्रम एक निश्चित समय तक ही कार्य कर सकता है। यह किसी मशीन की तरह लगातार बिना रुके कार्य नहीं कर सकता है।

पूँजी गहन विधि को प्रभावित करने वाले तत्व या विशेषताएँ—

1. **गतिशीलता**—पूँजी को आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाया व ले जाया जा सकता है। यह उत्पादन का गतिशील साधन है।

2. **निष्क्रिय और नश्वर साधन**—यह उत्पादन का निष्क्रिय साधन है। इसका प्रयोग करने के लिए श्रम को लगाना पड़ता है। इसका जीवनकाल भी सीमित होता है।

3. पूर्ति में कमी या वृद्धि—उद्यमी अपनी आवश्यकता के अनुसार पूँजी में कमी या वृद्धि कर सकता है। इसकी आपूर्ति स्थाई नहीं होती है।

अथवा

प्रश्न—"वस्तुओं और सेवाओं की अर्थव्यवस्था में बहुमुखी भूमिका होती है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का महत्व—

1. मानवीय आवश्यकताएँ—मानवीय आवश्यकताओं का कोई अन्त नहीं होता है। इन आवश्यकताओं की संतुष्टि वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग के द्वारा किया जाता है। वस्त्र, भोजन, बर्तन, मकान, जूते, फर्नीचर आदि वस्तु हैं तथा डॉक्टर, बिजली, पानी आदि सेवाओं के अंतर्गत आते हैं।

2. उत्पादन—मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया जाता है। लेकिन उत्पादन में वृद्धि के लिए अन्य वस्तुओं एवं सेवाओं की आवश्यकता होती है। इन वस्तुओं एवं सेवाओं में कच्चा माल, मशीन, ट्रेक्टर, खाद, बीज, बीमा, बैंक, परिवहन आदि आते हैं।

3. निवेश—वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि ही निवेश की मात्रा को निर्धारित करती है। उत्पादन का एक भाग मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है। तो शेष बचा भाग उत्पादन की मात्रा में वृद्धि करता है। शेष उत्पादन में निवेश निहित होता है।

प्रश्न 34. 'माँग के नियम' की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर—'माँग का नियम'

माँग के नियम को जानने के लिए माँग तालिका एवं माँग वक्र को जानना आवश्यक है—

माँग तालिका

संतरे का मूल्य (प्रति इकाई रुपये में)	**संतरे की माँग** (इकाइयों में)
1	30
2	20
3	15
4	12
5	10

प्रदर्शित तालिका से स्पष्ट होता है कि बाजार में जैसे-जैसे संतरे की कीमत 1 रुपये प्रति इकाई से बढ़ती जाती है। वैसे-वैसे संतरे की माँग 30 इकाई से घटती जाती है। जैसे कि संतरे की कीमत 1 रुपये प्रति इकाई है तब उसकी माँग 30 इकाई है, लेकिन जब संतरे की

कीमत 5 रुपये हो जाती है तब उसकी माँग घटकर 10 इकाई हो जाती है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि वस्तु की मूल्य वृद्धि का उसके माँग पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

रेखाचित्र की सहायता से माँग का स्पष्टीकरण—

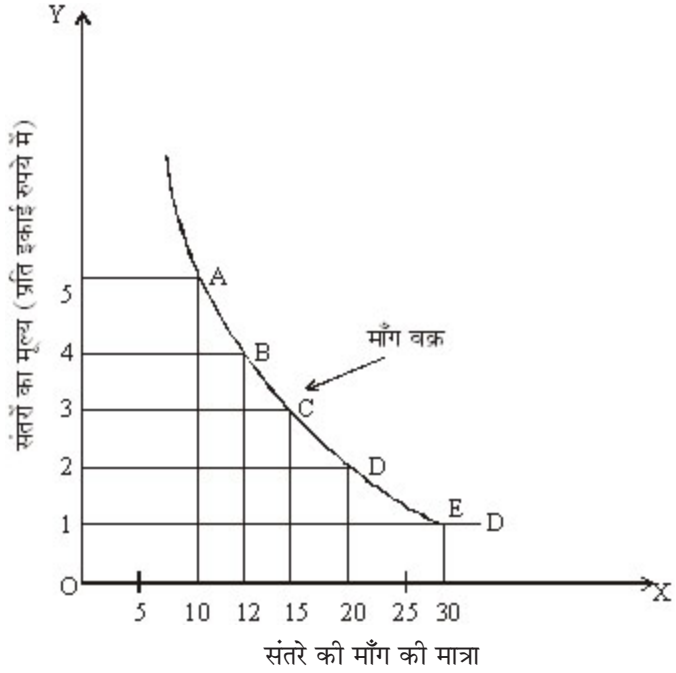

चित्र

उपर्युक्त रेखाचित्र में OX आधार पर संतरे के माँग की मात्रा तथा OY लम्ब रेखा पर संतरे का मूल्य (प्रति इकाई रुपये में) दिया गया है। चित्र में DD माँग वक्र है। DD माँग वक्र में स्थित बिन्दु A यह दर्शाता है। कि जब संतरे की कीमत 5 रुपये प्रति इकाई है तो संतरे की माँग 10 इकाई है तथा माँग-वक्र का बिन्दु E यह दर्शाता है कि जब संतरे का मूल्य घटकर 1 रुपये प्रति इकाई हो जाता है तो संतरे की माँग बढ़कर 30 इकाई हो जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जब मूल्य कम होता है तो माँग बढ़ती है एवं जब मूल्य बढ़ता है तो माँग घटती है। अत: यह मूल्य एवं माँग के बीच विपरीत सम्बन्ध को स्पष्ट करती है।

अथवा

प्रश्न—'पूर्ति के नियम' की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर—'पूर्ति के नियम'

आम की पूर्ति तालिका

आम का मूल्य (रुपये/प्रति किलो)	**आम की मात्रा** (किलो)
5	100
6	115
7	130
8	145
9	160
10	175

तालिका से स्पष्ट होता है कि 5 रुपये किलो पर आम की पूर्ति 100 किलो होती है और 6 रुपये प्रति किलो पर यह बढ़कर 115 किलो हो जाती है। रेखाचित्र में पूर्ति वक्र का ऊपर की ओर उठना यह दर्शाता है कि मूल्य बढ़ने पर आम की पूर्ति अधिक होने लगती है।

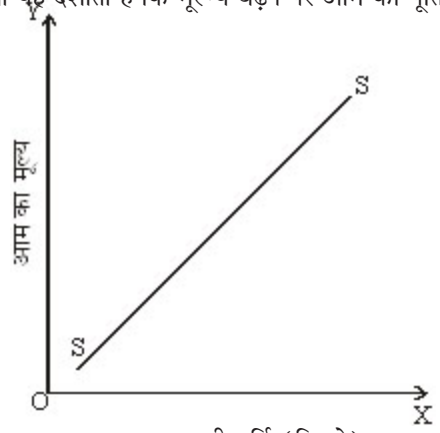

चित्र

प्रश्न 35. बैंक में खाता खोलने की विधि को समझाइये। (कोई छः बिन्दुओं में)

उत्तर—बैंक में खाता खोलने की विधि—

1. बैंक में खाता खोलने के लिए हमें सर्वप्रथम निर्धारित प्रारूप में आवेदन फार्म को भरना पड़ता है। इसमें हमें जिस प्रकार का खाता खोलना होता है। उसका उल्लेख करते हैं तथा अपनी आवश्यक जानकारियाँ इस फार्म में भरते हैं।

2. फार्म में हस्ताक्षर के स्थान पर हम नमूने का हस्ताक्षर करते हैं। जिससे लेन-देन के समय मिलान किया जाता है।

3. आवेदन पत्र के साथ हमें हस्ताक्षर तथा अपना परिचय साबित करने के लिए साक्ष्य प्रस्तुत करना पड़ता है।

4. आवेदन पत्र के ऊपर में फोटो के स्थान पर अपना फोटो चस्पा करते हैं तथा एक

अतिरिक्त फोटो देते हैं।

5. आवेदन के साथ खाता खालने की न्यूनतम राशि भी दिया जाता है।

6. आवेदन फार्म में हमें किसी ऐसे व्यक्ति का हस्ताक्षर साक्ष्य के रूप में लेना पड़ता है। जिसका खाता वर्तमान में बैंक में हो तथा वह हमें पहचानता भी हो।

तत्पश्चात् आवेदक का खाता खोला जाता है तथा उसे पासबुक व माँग करने पर चेकबुक भी दिया जाता है। पास-बुक में बैंक के साथ की जाने वाली समस्त व्यवहारों का वर्णन लिखा जाता है।

अथवा

प्रश्न 35. बीमे का महत्व समझाइये। (कोई छः बिन्दु में)

उत्तर—बीमा का महत्व—

1. व्यक्ति और व्यवसाय को लाभ—

(i) सुरक्षा—बीमा किसी निश्चित घटना के घटित होने की जोखिम के प्रति सुरक्षा उपलब्ध कराता है।

(ii) जोखिम का विभाजन—हानि की जोखिम दो पक्षों में विभाजित हो जाती है। यदि बीमित पक्ष को पॉलिसी में दर्ज किसी प्रकार की हानि होती है तो बीमा कंपनी उसकी बीमा राशि की भरपाई कर देती है।

(iii) बचतों का सृजन—व्यक्ति के लिए जीवन बीमा की योजनाएँ दीर्घकालीन बचत का रूप धारण कर लेती है।

(iv) ऋण की सुविधा—बीमा कंपनियाँ अपने पॉलिसी धारकों को पॉलिसी के आधार पर ऋण सुविधाएँ देती हैं।

2. देश को लाभ—

(i) सामाजिक क्षेत्र में लाभ—बीमा सामाजिक, कुशल क्षेत्र का संवर्धन करता है। यह लोगों को भविष्य के लिए बचत करने को प्रोत्साहित करता है। इससे बच्चों की शिक्षा, विवाह एवं वृद्धावस्था में सहयोग प्राप्त होता है।

(ii) विदेशी व्यापार को बढ़ावा—वस्तुओं के अन्तर्राष्ट्रीय परिवहन में अनेक प्रकार की जोखिमें निहित होती हैं। बीमा इन जोखिमों को वहन कर विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करती है।

प्रश्न 36. विकसित और विकासशील देशों में अंतर स्पष्ट कीजिए। (कोई छः)

उत्तर—विकसित और विकासशील देशों में अंतर—

क्र.	विकसित देश	विकासशील देश
1.	विकसित देश में प्रति व्यक्ति आय अधिक होती है।	विकासशील देशों में प्रतिव्यक्ति आय कम होती है।
2.	विकसित देशों में जनता का जीवन स्तर ऊँचा होता है।	इसमें जनता का जीवन स्तर निम्न होता है।
3.	यहाँ रोजगार के अवसर अधिक होते हैं।	यहाँ रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत कम होता है।
4.	इन देशों में गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा एवं बीमारियाँ नहीं होती हैं।	इन देशों में गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा एवं बीमारियाँ होती हैं।
5.	जापान, अमेरिका, जर्मनी, इंग्लैण्ड, आदि विक"त देश हैं।	भारत, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान आदि विकासशील देश है।
6.	इन देशों में नवीन तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।	इन देशों में परम्परागत तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

अथवा

प्रश्न—'बौद्धिक सम्पदा अधिकार' को समझाइये।

उत्तर—बौद्धिक सम्पदा अधिकार वह अधिकार है जो कि व्यक्ति को अपने मस्तिष्क की रचनाओं पर दिये जाते हैं।

बौद्धिक सम्पदा अधिकार वह सम्पदा है जो कि एक देश में नागरिकों अथवा उद्यमों के पास 'कापीराइट' व्यापार चिन्ह औद्योगिक डिजायन अथवा भौगोलिक सूचनाओं के रूप में हैं यदि दूसरे देश का कोई उद्यम पेटेंट के मालिक की अनुमति के बिना या उस ज्ञान के बिना भुगतान किए पेटेंट की नकल करता है जो वह पेटेंट मालिक के पेटेंट अधिकारों का उल्लंघन करता है। विश्व व्यापार संघ के अनुसार बौद्धिक सम्पदा अधिकार बौद्धिक रचनाओं पर अधिाकार है। ये सामान्यत: सृजक को अपनी रचना का उपयोग करने का कुछ अवधि के लिए एकमात्र अधिकार प्रदान करते हैं।

बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण अब व्यापक एवं गम्भीर चर्चा का मुद्दा बन गया है। विश्व व्यापार संगठन के सदस्य के रूप में भारत के लिए भी बौद्धिक संपदा अधिकार समझौता बंधनकारी है।

प्रश्न 37. लिंगानुपात किसे कहते हैं? एक काल्पनिक आँकड़ों से लिंगानुपात की गणना कीजिए।

उत्तर—सम्पूर्ण जनसंख्या का स्त्री एवं पुरुष में वर्गीकरण जनसंख्या की लिंग संरचना की ओर इंगित करता है। इसे हम लिंगानुपात के रूप में व्यक्त करते हैं। जनसंख्या में प्रति एक हजार पुरुषों में स्त्रियों की संख्या को लिंगानुपात कहते हैं।

लिंगानुपात ज्ञात करने का सूत्र—

लिंगानुपात तालिका

जनगणना वर्ष	लिंगानुपात
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927
2001	933

अथवा

प्रश्न—जनसंख्या वृद्धि दर किसे कहते हैं? निम्न आँकड़ों के आधार पर नैसर्गिक वृद्धिदर की गणना कीजिए—

वर्ष-1981-91, जन्मदर-31, मृत्युदर-11

उत्तर—जनसंख्या वृद्धि दर से आशय—एक निश्चित समय में लोगों की संख्या में जिस दर से वृद्धि होती है उसे जनसंख्या वृद्धि दर कहते हैं।

नैसर्गिक वृद्धि दर से आशय—जब हम जन्म दर में से मृत्यु दर को घटाते हैं तो इससे प्राप्त अंतर को हम जनसंख्या नैसर्गिक वृद्धि दर कहते हैं।

जन्म एवं मृत्यु दर को प्रति 1000 जनसंख्या के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। और उसकी गणना वार्षिक दर के रूप में की जाती है। इसलिए—

नैसर्गिक वृद्धि दर = जन्म दर–मृत्यु दर
= 31–11
= 20

अत: नैसर्गिक वृद्धि दर = 20 होगा।

प्रश्न 38. प्रदूषण क्या है? वायु प्रदूषण के कारण लिखिए। (कोई तीन)

उत्तर—प्रदूषण शब्द का अर्थ प्राकृतिक संसाधन की गुणवत्ता में अवांछित परिवर्तन है। इस परिवर्तन से जीवन की तत्काल या दीर्घकालीन खतरा हो सकता है। अत: प्रदूषण जीवित लोगों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

वायु प्रदूषण के कारण निम्नलिखित हैं—

1. मोटर गाड़ियों से गैस की निकासी—गड़ियों के चलने से पेट्रोल तथा गैस के जलने से कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2) तथा हाइड्रोकार्बन उत्सर्जित होता है जिससे वायु प्रदूषित हो जाता है तथा साँस के माध्यम से हानि पहुँचाते हैं।

2. औद्योगिक भट्ठियाँ तथा चिमनी—कारखानों तथा बिजली परियोजनाओं से प्रयुक्त ईंधन से अनेक प्रकार की जहरीली गैसें निकलती हैं।

3. रासायनिक तथा अन्य औद्योगिक कचरा—अनेक रासायनिक उद्योग **जैसे**—अम्ल, प्लास्टिक, रंग, कागज, कीटनाशक, पेट्रो-रसायन से खतरनाक धुँआ एवं SO_2, N_2O, हाइड्रोकार्बन जैसे खतरनाक गैस निकलती है।

अथवा

प्रश्न—धारणीय विकास का अर्थ एवं प्राकृतिक संसाधनों का धारणीय उपयोग लिखिए।

उत्तर—धारणीय विकास को ऐसे विकास के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कि भविष्य की पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करें।

प्राकृतिक संसाधनों का धारणीय उपयोग—भविष्य में दुर्लभता से बचने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दीर्घकालीन उपयोग धारणीय होना चाहिए। नवीनीकरण योग्य संसाधनों के मामलों में यह कार्य सरल है। वे अक्षयशील है और उनका वर्तमान उपयोग उनके भविष्य उपयोग के साथ समझौता नहीं करता है। उनके संपोषणशील उपयोग का अर्थ यह होगा कि उनका अत्यधिक दोहन न हो और उन्हें पुनर्जनन का अवसर मिलें। उनमें से कुछ सजीव या चेतन हैं जैसे उदाहरण के लिए पेड़ हैं। सजीव नवीकरणीय संसाधन अपने आप पुनर्जनन करते हैं क्योंकि वे स्वयं का पुन: उत्पादन करते हैं। उनकी पुनरोत्पादन क्षमता उन्हें अक्षय बना देती है। लेकिन केवल एक सीमा तक।

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—मई-जून, 2012

कक्षा-10वीं

विषय-अर्थशास्त्र

सेट-2

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक-100**

निर्देश— (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) सभी प्रश्नों के अंक प्रश्नों के सामने अंक विभाजन के साथ अंकित हैं।

(iii) प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक बहुविकल्पीय, 6 से 10 तक खाली स्थान 11 से 15 सत्य/असत्य एवं 16 से 22 तक एक शब्द/वाक्य के प्रश्न हैं।

(iv) प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 50-60 शब्द हैं।

(v) प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 150-200 शब्द हैं।

निर्देश—सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. भारतीय डाक तार है एक—

(a) सार्वजनिक उपक्रम (b) साझेदारी

(c) एकल स्वामित्व (c) सहकारी उपक्रम।

उत्तर—(a) सार्वजनिक उपक्रम।

2. उत्पादन की इकाइयों का संगठन करता है—

(a) भू-स्वामी (b) श्रमिक

(c) उद्यमी (d) पूँजीपति।

उत्तर—(c) उद्यमी।

3. भारतीय रेल किस प्रकार की उत्पादन इकाई है—

(a) सार्वजनिक उद्यम (b) साझेदारी उद्यम

(c) निजी उद्यम (d) एकल स्वामित्व।

उत्तर—(a) सार्वजनिक उद्यम।

4. परिवहन का सबसे सस्ता साधन है—

(a) रेल परिवहन (b) जल परिवहन

(c) सड़क परिवहन (d) वायु परिवहन।

उत्तर—(a) रेल परिवहन।

5. दूर संचार का माध्यम है—

(a) टेलीविजन (b) टेलीफोन

(c) इंटरनेट (d) इनमें से सभी।

उत्तर—(d) इनमें से सभी।

निर्देश—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

6. मानवीय आवश्यकताएँ.....हैं।

उत्तर—अनंत।

7. एक मंत्री के लिए कार एक.....वस्तु है।

उत्तर—अनिवार्य।

8. श्रम का प्रतिफल.....है।

उत्तर—मजदूरी।

9. केवल एक विक्रेता वाला बाजार.....कहलाता है।

उत्तर—एकाधिकारी।

10. वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन.....करती है।

उत्तर—व्यापारी।

निर्देश—सत्य/असत्य वाक्यों का चयन कीजिए—

11. वस्तु विनिमय व्यवस्था में दोहरे संयोग का होना अनिवार्य होता है।

उत्तर—सत्य।

12. ब्याज और भाड़ा सम्पत्ति से आय है।

उत्तर—सत्य।

13. वस्तुओं और सेवाओं की खरीदारी का एक मात्र उद्देश्य उपयोग है।

उत्तर—सत्य।

14. चालू खाते में जमा राशियों पर बैंक कोई ब्याज नहीं देती है।

उत्तर—सत्य।

15. LIC का अर्थ है जीवन बीमा कम्पनी है।

उत्तर—सत्य।

निर्देश—एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए—

प्रश्न 16. विक्रेता किसे कहते हैं ?

उत्तर—वह व्यक्ति, व्यक्तियों का समूह या संस्था विक्रेता कहलाता है जो किसी रकम के बदले कोई वस्तु या सेवा को बेचता है।

प्रश्न 17. ईंटों का बाजार क्या है ?

उत्तर—ईंटों का बाजार स्थानीय होता है।

प्रश्न 18. प्रति व्यक्ति आय की गणना का सूत्र लिखिए।

उत्तर—सूत्र— प्रति व्यक्ति आय = $\frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$ ।

प्रश्न 19. जन्मदर एवं मृत्युदर में अन्तर क्या कहलाता है ?

उत्तर—जन्मदर एवं मृत्युदर में अन्तर नैसर्गिक वृद्धि-दर कहलाता है।

प्रश्न 20. सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा योजना कब प्रारम्भ की गई ?

उत्तर—14 जुलाई, 2003 को सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा योजना प्रारम्भ की गई।

प्रश्न 21. प्रदूषण क्या है ?

उत्तर—प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता में अवांछनीय परिवर्तन ही प्रदूषण कहलाता है।

प्रश्न 22. प्राकृतिक संसाधन को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—पर्यावरण से प्राप्त होने वाली प्राकृतिक पदार्थों तथा ऊर्जा को 'प्राकृतिक संसाधन' कहते हैं। यह हमें प्रकृति से नि:शुल्क प्राप्त होती है।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक आबंटित हैं। उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 23. ''श्रम एक नश्वर साधन है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—श्रम उत्पादन का नश्वर साधन है। श्रम का उपयोग किया जाय या नहीं समय के साथ-साथ यह नष्ट होते जाता है। आप जितनी अवधि तक श्रम का उपयोग नहीं करते हैं उतनी अवधि का श्रम स्वत: ही नष्ट हो जाता है। इसे अन्य वस्तुओं जैसे मशीनों की तरह संचित करके नहीं रखा जा सकता है।

अथवा

प्रश्न—''भूमि प्रकृति की देन है।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भूमि प्रकृति द्वारा प्रदत्त नि:शुल्क उपहार है। उत्पादन के विभिन्न साधनों में भूमि एक ऐसा साधन है जिसमें न तो वृद्धि की जा सकती है और न ही कमी।

भूमि को आशय जमीन की ऊपरी सतह से है जिसमें झीलों, नदियों, समुद्रों, वनों, पशुओं, मछलियों, खनिज संसाधनों, पहाड़ों-पर्वतों आदि को शामिल किया जाता है।

प्रश्न 24. उत्पादन में वृद्धि से क्या आशय है ?

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 24 देखें।

अथवा

प्रश्न—बड़े पैमाने के उद्योग से क्या आशय है ?

उत्तर—बड़े पैमाने के उद्योग से हमारा आशय उन उद्योगों से है जिनमें अचल पूँजी का निवेश बड़े स्तर पर किया जाता है। 3 करोड़ रुपये से अधिक अचल पूँजी वाले उद्योगों को इसमें शामिल किया जाता है। **जैसे**—वस्त्र उद्योग, लोहा एवं इस्पात उद्योग, सीमेंट उद्योग, चीनी उद्योग आदि। बड़े पैमाने के उद्योगों में अत्यधिक मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

प्रश्न 25. उत्पादन क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है ? समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 24 देखें।

अथवा

प्रश्न—कुटीर उद्योग क्या है ? समझाइये।

उत्तर—कुटीर उद्योग आमतौर पर परिवार के सदस्यों के द्वारा उनके घर में ही संचालित किया जाता है। इसमें परिवार के अपने संसाधनों से ही जुटाई गई थोड़ी-सी पूँजी लगी होती है।

प्रश्न 26. वितरण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले किन्हीं दो आर्थिक क्रियाओं को

समझाइये।

उत्तर—वितरण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारक—

1. क्रय शक्ति—वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए उपभोक्ताओं के पास आय होनी चाहिए। यह आय ही उपभोक्ता की क्रय शक्ति कहलाती है।

2. बाजार का अस्तित्व—वस्तुओं और सेवाओं के वितरण के लिए उनके बाजारों का अस्तित्व होना चाहिए। बाजार ही वह स्थान होता है जहाँ एकत्र होकर विक्रेता और क्रेता वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय-विक्रय करते हैं।

अथवा

प्रश्न—वस्तुओं और सेवाओं के वितरण में भण्डार की भूमिका नष्ट कीजिए। (कोई चार)

उत्तर—वितरण में भण्डार की भूमिका—1. उत्पादक बड़े पैमाने पर वस्तुओं का निर्माण करते हैं यदि उन्हें संभालकर नहीं रखा गया तो वे उपभोक्ताओं तक पहुँचने से पहले ही खराब हो जायेंगे।

2. थोक एवं खुदरा व्यापारियों को भी अपने-अपने स्तर पर अपनी क्षमता के अनुसार गोदामों की आवश्यकता होती है।

3. भण्डार गृह वितरण प्रणाली की महत्वपूर्ण कड़ी है। जब किसी स्थान विशेष पर बिक्री के लिए भारी मात्रा में उत्पादन भेजा जाता है तो उसे उतारकर किसी स्थानीय गोदाम में रखा जाता है।

4. शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं को सुरक्षित रखने तथा मौसम बदलने के बाद भी प्रयोग करने के लिए कोल्ड स्टोरेज की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 27. ''वस्तु विनिमय से लेन-देन में कठनाई होती है।'' समझाइये। (कोई चार)

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 27 देखें।

अथवा

प्रश्न—''खरीददारी एक आर्थिक प्रक्रिया है।'' समझाइये।

उत्तर—खरीददारी एक आर्थिक प्रक्रिया है। इसे समझने के लिए निम्न दो बिन्दुओं का अध्ययन करना आवश्यक है।

1. परिवार—उत्पादन के पाँच साधन होते हैं—भूमि, पूँजी, श्रम, संगठन तथा साहस। प्रत्येक साधन को उनकी सेवाओं के प्रतिफल में क्रमशः लगान, ब्याज, मजदूरी, वेतन तथा लाभ प्राप्त होता है। इस सभी का स्वामी परिवार ही होता है। परिवार ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए फर्म से वस्तुएँ एवं सेवाएँ क्रय करता है।

2. फर्म—फर्म परिवार द्वारा प्रदत्त साधन सेवाएँ भाड़े पर लेती है बदले में मजदूरी, ब्याज, लगान, वेतन व लाभ-हानि के रूप में परिवार को भुगतान करती है। ये फर्म परिवार को वस्तुएँ व सेवाएँ बेचते हैं जिससे परिवार से रुपये प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 28. समय के आधार पर बाजार को वर्गीकृत कीजिए। (कोई चार)

उत्तर—समय के आधार पर बाजार को चार भागों में विभक्त किया गया है—

1. अति अल्पकालीन बाजार—जब किसी वस्तु की पूर्ति उसके उपलब्ध स्टॉक तक सीमित होती है तो उसे अति अल्पकालीन या दैनिक बाजार कहते हैं।

2. अल्पकालीन बाजार—जब किसी वस्तु की पूर्ति को एक निश्चित सीमा तक घटाने या बढ़ाने के लिए थोड़ा-सा समय मिल जाता है तो उस वस्तु के बाजार को अल्पकालीन बाजार कहते हैं।

3. दीर्घकालीन बाजार—दीर्घकालीन बाजार से आशय उस बाजार से है जिसमें वस्तुओं की पूर्ति को उसके माँग के अनुरूप बढ़ाने तथा घटाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है।

4. अति दीर्घकालीन बाजार—जब किसी वस्तु के माँग एवं पूर्ति दोनों में बहुत अधिक परिवर्तन होता है तो ऐसे वस्तु के बाजार को अति दीर्घकालीन बाजार कहते हैं।

अथवा

प्रश्न—थोक एवं फुटकर विक्रेताओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए। (कोई दो)

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक-26 देखें।

प्रश्न 29. व्यक्ति और व्यवसाय को बीमा से होने वाले लाभों की व्याख्या कीजिए। (कोई चार)

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 35 देखें।

अथवा

प्रश्न—डाक द्वारा संचालित जमा योजनाओं की व्याख्या कीजिए। (कोई चार)

उत्तर—भारतीय डाक विभाग समय-समय पर अनेक प्रकार की डाकघर जमा योजनाएँ प्रारम्भ करती रहती है। **जैसे—**

1. डाकघर बचत बैंक खाते—यह योजना सन् 1896 से निरन्तर चल रही है। यह खाता केवल 100 रुपये की राशि से खोला जा सकता है। जमा धन पर 3.5% ब्याज भी दिया जाता है।

2. डाकघर सावधिक जमा खाते—मार्च 1970 से डाकघर, 1,3 और 5 वर्ष की अवधि की जमाएँ स्वीकार कर रहे हैं। अगस्त 1972 से ये 2 वर्षीय जमाएँ भी स्वीकार करने लगे हैं।

3. डाकघर आवर्ती जमा खाते—अप्रैल 1970 से प्रारम्भ यह योजना 5 वर्षीय होती है। इस पर 8% की दर से ब्याज दिया जाता है।

4. किसान विकास पत्र—ये बचत पत्र अप्रैल 1988 से प्रारम्भ हुए थे। अब इनकी परिपक्वता अवधि 8 वर्ष 7 माह है। इस अवधि में जमा राशि दोगुनी हो जाती है। इसकी कोई निवेश सीमा नहीं है। कर पर किसी भी प्रकार की छूट नहीं दी जाती है।

5. राष्ट्रीय बचत योजना—केवल मुख्य डाकघरों द्वारा चलाई जा रही इस योजना में आजकल 8% वार्षिक ब्याज मिलता है और अधिकतम 70,000 रुपये की राशि एक वर्ष में जमा कराई जा सकती है।

प्रश्न 30. ''विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का संरक्षक है।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए। (किन्हीं चार बिन्दुओं पर)

उत्तर—विश्व व्यापार संगठन के सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

1. भेदभाव नहीं—एक देश को अपने व्यापारिक साझेदारों में भेदभाव नहीं करना चाहिए। उसे अपने तथा विदेशी उत्पादों, सेवाओं व नागरिकों के बीच भेद नहीं करना चाहिए।

2. पारस्परिकता—इसका अर्थ परस्पर आधार पर रियायतें देना है। जिससे यह सुनिश्चित होगा कि निर्यात से लाभ सुलभ होंगे।

3. बंधनकारी तथा प्रवर्तनीय वचन—उदारीकरण वचनों तथा समझौतों को लागू किया जाएगा। उनके गैर-प्रवर्तनीय होने की दशा में एक शिकायतकर्ता देश विश्व व्यापार संगठन के पास निवारण के लिए जा सकता है।

4. सुरक्षा कवच—विशिष्ट परिस्थितियों में सरकारों में व्यापार पर प्रतिबंध लगाने का अधिकार होगा।

5. पारदर्शिता—विश्व व्यापार संगठनों से यह आशा की जाती है कि वे अपने व्यापार विनियमनों से प्रकाशित करें और ऐसी संस्थाएँ बनायें जो प्रशासनिक निर्णयों की पुनर्समीक्षा करें। अन्य सदस्यों को माँगी गई सूचना प्रदान करें एवं व्यापार नीतियों में परिवर्तन की सूचना दें। पारदर्शिता से व्यापार नीतियों से सम्बन्धित अनिश्चितता का अंत करने में सहायता मिलेगी।

अथवा

प्रश्न— 'मानव विकास सूचक' देशों का वर्गीकरण किस प्रकार करता है ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मानव विकास सूचकांक के आधार पर भी देशों को क्रमबद्ध किया जा सकता है। यह क्रमबद्धता शून्य से एक तक ही संख्याओं द्वारा व्यक्त की जाती है यहाँ शून्य का अर्थ 'न्यूनतम' तथा एक का अर्थ 'अधिकतम' विकास से है।

मानव विकास सूचक देशों का तीन वर्ग बनाता है—

1. निम्न मानव विकास—मानव विकास सूचक का मान 0.0 से 0.50 तक।

2. मध्यम मानव विकास—सूचक का मान 0.51 से 0.79 तक।

3. उच्च मानव विकास—सूचक का मान 0.79 से 1.00 तक।

प्रश्न 31. ''निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र परस्पर सम्बन्धित है।'' इस कथन को समझाइये।

उत्तर—1956 की औद्योगिक नीतियों ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों के सहअस्तित्व पर बल देते हुए मिश्रित अर्थव्यवस्था अपनाने की घोषणा की। दोनों ही क्षेत्रों को औद्योगिक विकास कार्यक्रम में योगदान देना है। इनकी परस्पर निर्भरता के विचार को सहज भाव से स्वीकार कर लिया गया। वित्तीय एवं अन्य सहायता के लिए निजी क्षेत्र सार्वजनिक संस्थाओं पर आश्रित रहता है ऊपरी संरचना तथा आधारभूत उद्योगों में सार्वजनिक निवेश निजी उत्पादकों के लिए उत्पादक आगतें, सहूलियतें और बाजार विकसित करता है। सार्वजनिक क्षेत्र भी किसी विशेष उद्योगों के विकास के लिए निजी उद्यमों का सहयोग आमंत्रित कर सकता है। अत: यह कह सकते हैं कि निजी और सार्वजनिक क्षेत्र परस्पर निर्भर है।

अथवा

प्रश्न—''जनसंख्या वृद्धि से सामाजिक-आर्थिक विकास की गति मंद पड़ जाती

है।'' इस कथन को समझाइये।

उत्तर—भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से सामाजिक-आर्थिक विकास की गति पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। जिस कारण भोजन, कपड़ा, मकान और अन्य सुविधाओं की माँग तेजी से बढ़ रही है। इन माँगों की पूर्ति के लिए अधिक संसाधनों के उपयोग की आवश्यकता है, लेकिन उत्पादन बढ़ाने से उत्पाद अपने आप उपभोक्ता के पास नहीं पहुँच पाते। उन्हें वस्तुओं को खरीदना पड़ता है और क्रय शक्ति आय पर निर्भर करती है तथा लोगों को आय की प्राप्ति तभी होती है जब रोजगार के अवसर उपलब्ध हो।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घउत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर **6 अंक** आबंटित हैं। शब्द सीमा 100-150 शब्द।

प्रश्न 32. आवश्यकताओं की छः विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—आवश्यकता के लक्षण या विशेषताएँ—

1. आवश्यकताएँ अनंत होती हैं—व्यक्ति जैसे ही अपनी पहली आवश्यकता की पूर्ति करता है उसके तुरन्त बाद ही दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी आवश्यकताएँ उत्पन्न हो जाती हैं। यह क्रम निरंतर चलता रहता है।

2. आवश्यकताएँ प्रतियोगी होती हैं—व्यक्ति की अनेक आवश्यकताएँ होती हैं अतः व्यक्ति को अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकता को पहले पूर्ण करना पड़ता है।

3. आवश्यकताओं का पूरक होना—कुछ आवश्यकताएँ ऐसी होती हैं जिसमें मनुष्य को एक आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए दूसरी आवश्यकता को भी पूर्ण करनी पड़ती हैं **जैसे**—पेन के लिए स्याही, आदि।

4. एक समय में एक आवश्यकता की संतुष्टि—व्यक्ति की आवश्यकताएँ चाहे जितनी भी हों लेकिन वह एक समय में केवल एक आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है।

5. तीव्रता में भिन्नता—आवश्यकताओं की तीव्रता में भिन्नता होती है। हम उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति सर्वप्रथम करते हैं जिसकी तीव्रता सबसे अधिक होती है।

6. इच्छा, साधन तथा तत्परता का होना—आवश्यकता के लिए सबसे पहले इच्छा का जन्म होना चाहिए। तत्पश्चात् उस इच्छा की पूर्ति के लिए साधन (धन) होना चाहिए। इच्छा की पूर्ति के लिए उपलब्ध साधन को व्यय करने के लिए तत्परता का होना आवश्यक है।

अथवा

प्रश्न—आवश्यकताओं के विभिन्न प्रकारों को लिखिए।

उत्तर—आवश्यकताओं को निम्न वर्गों में विभाजित किया गया है—

1. आर्थिक एवं गैर-आर्थिक आवश्यकताएँ—वह आवश्यकताएँ जो वस्तुओं या सेवाओं के उपभोग से पूर्ण होती हैं तथा जिनका बाजार में क्रय-विक्रय होता है आर्थिक आवश्यकताएँ कहलाती हैं।

इसके विपरीत ऐसी आवश्यकताएँ जो मनोवैज्ञानिक होती हैं **जैसे**—माता-"ता का प्यार आदि अनार्थिक आवश्यकताएँ कहलाती हैं।

2. व्यक्तिगत और सामूहिक आवश्यकताएँ—जब किसी वस्तु या सेवा से किसी एक

व्यक्ति की आवश्यकता की संतुष्टि होती है तो व्यक्तिगत आवश्यकताएँ कहते हैं।

इसके विपरीत जब किसी वस्तु या सेवा से किसी समूह या समाज की आवश्यकता की पूर्ति होती है तो उसे सामूहिक आवश्यकताएँ कहते हैं।

3. अनिवार्य, आरामदायक एवं विलासिता की आवश्यकताएँ—जीवन रक्षक, कार्यक्षमता में वृद्धि करने वाले, तथा समाज में प्रतिष्ठा कायम रखने से सम्बन्धित आवश्यकताएँ अनिवार्य आवश्यकताएँ कहलाती हैं।

अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद आराम और सुख प्राप्त करने के लिए जिन आवश्यकताओं की पूर्ति किया जाता है उन्हें आरामदायक आवश्यकताएँ कहते हैं।

ऐसी वस्तुएँ या सेवाएँ जिनके उपयोग से व्यक्ति को अतिरिक्त आनंद या सुख की प्राप्ति होती है उसे विलासिता की आवश्यकताएँ कहते हैं। विलासिता सम्बन्धी आवश्यकताएँ दो प्रकार की होती हैं—

(i) हानिकारक विलासिता की आवश्यकताएँ **जैसे**—शराब, धूम्रपान आदि।

(ii) हानिरहित विलासिता की आवश्यकताएँ **जैसे**—महँगे वस्त्र, ए.सी. कार आदि।

प्रश्न 33. वस्तुओं और सेवाओं से क्या आशय है ? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर—दैनिक जीवन में हम अनेक वस्तुओं एवं सेवाओं का उपभोग करते हैं **जैसे**—भूख लगने पर खाना खाते हैं, लिखने के लिए पेन, कागज का उपयोग करते हैं तथा अपना मनोरंजन करने के लिए खेल खेलते हैं या टी.वी. देखते हैं। इन सब वस्तुओं से हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

वस्तु कहलाने के लिए निम्न गुणों का विद्यमान होना आवश्यक है—

1. वस्तु को देखा जाये एवं छुआ (स्पर्श) किया जा सकता है।

2. इनके उत्पादन और उपभोग में कुछ समय का अंतर होता है।

3. इन्हें संभालकर रखा जा सकता है तथा आवश्यकता होने पर प्रयोग किया जा सकता है।

4. इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्थानांतरित किया जा सकता है।

हमारी आवश्यकताएँ केवल वस्तुओं से ही संतुष्ट नहीं होती हैं। कुछ आवश्यकताएँ ऐसी होती हैं जिनकी पूर्ति के लिए हमें किसी अन्य व्यक्ति से सहायता लेनी पड़ती है। **जैसे**—हमें बाल कटाने के लिए नाई तथा कपड़े सिलाने के लिए दर्जी से सहायता लेनी पड़ती है। नाई तथा दर्जी के द्वारा हमारे लिए किया गया कार्य ही सेवा कहलाता है। अर्थात् सेवाओं से भी हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

सेवा की पहचान निम्न बातों से की जा सकती है—

1. सेवाएँ अदृश्य होती हैं अर्थात् इसे देखा व स्पर्श नहीं किया जा सकता है।

2. इनके उत्पादन और उपभोग के बीच समय का अंतर नहीं होता। इनके उत्पादन और उपभोग साथ-साथ चलते हैं।

3. सेवाओं का भण्डारण नहीं होता है।

4. सेवाओं का हस्तांतरण भी नहीं हो सकता है।

अथवा

प्रश्न—अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (कोई तीन)।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 33 देखें।

प्रश्न 34. ''आड़ी माँग उन्हीं वस्तुओं पर उत्पन्न होती है जो एक-दूसरे पर घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होती है।'' सोदाहरण इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—आड़ी माँग का आशय—वस्तु की वह मात्रा जो वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत में परिवर्तन होने पर उपभोक्ताओं के द्वारा क्रय किया जाता है आड़ी माँग कहलाता है। **जैसे—**

1. प्रतिस्थापन वस्तुएँ—ऐसी वस्तुएँ जिनका उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है उसे प्रतिस्थापन वस्तुएँ कहते हैं। **जैसे**—चाय एवं कॉफी।

2. पूरक वस्तुएँ—जिन वस्तुओं का एक-दूसरे के साथ पूरक के रूप में प्रयोग किया जाता है उन्हें पूरक वस्तुएँ कहते हैं। **जैसे**—कार एवं पेट्रोल, पेन एवं स्याही।

अत: पूरक वस्तुओं की आड़ी माँग वक्र रेखा बायें से दायें नीचे की ओर गिरती हुई होती है।

अथवा

प्रश्न—श्रेष्ठ एवं निकृष्ट किस्म की वस्तुओं पर 'आय माँग' की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—आय माँग से तात्पर्य वस्तुओं एवं सेवाओं की उन विभिन्न मात्राओं से है जो अन्य बातें समान होने पर उपभोक्ता एक निश्चित समय में आय के विभिन्न स्तरों पर क्रय करने को तैयार रहता है अर्थात् आय के बढ़ाने पर माँग बढ़ती है और आय के कम होने पर माँग कम होती है। श्रेणी की दृष्टि से वस्तुओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

1. श्रेष्ठ किस्म की वस्तुओं के सम्बन्ध में—जो माँग वक्र से प्राप्त होगा उसका ढाल ध नात्मक होगा अर्थात् आय में वृद्धि के साथ-साथ माँग में वृद्धि होती है।

2. निकृष्ट किस्म की वस्तुओं के सम्बन्ध में—माँग वक्र का ढाल ऋणात्मक होगा जैसा कि गिफिन वस्तुओं के सम्बन्ध में होता है। ज्यों-ज्यों उपभोक्ता की आय बढ़ती है, त्यों-त्यों ऐसी वस्तुओं की माँग को घटा देता है।

प्रश्न 35. उत्पादक एवं अनुत्पादक बचत में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उत्पादक एवं अनुत्पादक बचत में अन्तर—बचत का उत्पादक या अनुत्पादक होना बचत के प्रयोग और उसके समग्र आय के प्रभाव पर निर्भर करता है।

यदि बचत का निवेश हो तो यह 'उत्पादक बचत' होगी इसके कारण आय में कमी नहीं होती है। इस प्रकार की जमाखोरी अच्छी मानी जाती है। यह बेरोजगारी को कम करती है।

इसके विपरीत यदि बचत जमाखोरी का रूप धारण कर लेती है तो वह 'अनुत्पादक

बचत' हो जाती है। इसके कारण अर्थव्यवस्था की समग्र आय में कमी आती है। इस प्रकार की जमाखोरी अच्छी नहीं मानी जाती है। इससे बेरोजगारी में वृद्धि होती है।

अत: हम यह कह सकते हैं कि बचत नहीं बल्कि जमाखोरी अनुत्पादक होती है क्योंकि इसके कारण निवेश के माध्यम से वास्तविक पूँजी का निर्माण नहीं होता।

अथवा

प्रश्न—भारत में उपलब्ध प्रमुख बीमा योजनाओं को समझाइये। (कोई तीन)।

उत्तर—भारत में उपलब्ध जीवन बीमा योजनाएँ निम्नलिखित हैं—

1. जीवन बीमा योजना—जीवन बीमा अनुबंध में बीमाधारी को एक निश्चित अवधि के अंत या मृत्यु, जो भी पहले हो, होने की दशा में बीमाकर्ता से पूर्व निर्धारित राशि मिल जाती है यह व्यक्ति के जीवन पर आधारित होता है। यह निश्चित अवधि या जीवन भर के लिए किया जाता है।

2. अग्नि बीमा—इसमें बीमाकर्ता, बीमित व्यक्ति को बीमा अवधि में आग से होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति का वचन देता है। हानि होने पर बीमित व्यक्ति वास्तविक हानि और बीमा ध ान में से जो भी राशि क्रय हो उसका दावा कर सकता है।

3. नौ परिवहन बीमा—यह बीमाधारी को समुद्र यात्रा, आवागमन और समुद्री मार्ग से व्यापार आदि के दौरान हुई हानि की क्षतिपूर्ति करता है। कई बार यह बीमा आंतरिक जलमार्गों तथा समुद्री यात्रा से जुड़ी हानि के समय बीमाधारी का बीमा योग्य हित होना आवश्यक है।

4. स्वास्थ्य बीमा—बीमा क्षेत्र की यह महत्वपूर्ण योजना है। इसमें बीमाधारी को चिकित्सा खर्च की राशि अपने बीमाकर्ता से प्राप्त होती है। विभिन्न समयावधियों में एक उचित-सी बीमा किश्त का भुगतान किया जाता है। आज अनेक प्रकार की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा बीमा योजनाएँ सामान्य बीमा कम्पनियों द्वारा चलाई जा रही हैं।

प्रश्न 36. मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (कोई तीन)

उत्तर—मिश्रित अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ—

1. सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र का सहअस्तित्व—सार्वजनिक क्षेत्र में उत्पादन की इकाइयों पर नियंत्रण सरकार का रहता है। निजी क्षेत्र की इकाइयों पर नियंत्रण व्यक्तिगत होता है। ये निजी इकाइयाँ अपने निजी हितों के लिए संचालित होती हैं। दोनों के आर्थिक कार्यों का स्पष्ट विभाजन होता है। सरकार अपने मूल्य, मौद्रिक व राजकोषीय नीतियों, करारोपण द्वारा निजी क्षेत्र पर नियंत्रण व नियमन का कार्य करती है।

2. वैयक्तिक स्वतंत्रता—व्यक्ति अपना व्यवसाय व उपभोग चुनने को स्वतंत्र होता है। निजी क्षेत्र में व्यक्ति अपनी कुशलता द्वारा अपनी आय को अधिकतम करने का प्रयास करते हैं, लेकिन सरकारी नियंत्रण के कारण उपभोक्ताओं का शोषण करने की छूट नहीं होती है। सरकार हानिकारक वस्तुओं के उत्पादन व उपभोग पर अधिक कर लगा सकती है।

3. आर्थिक नियोजन—सरकार द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत दीर्घकालिक

योजनाओं का निर्माण कर अर्थव्यवस्था के विकास में निजी एवं सार्वजनिक उद्यमों के कार्य क्षेत्र उत्तरदायित्वों का निर्धारण करती है। निजी क्षेत्र को सरकार प्रोत्साहन, समर्थन, अनुदान, सहायता, ऋण देकर कार्य करने को प्रोत्साहित करती है। सार्वजनिक क्षेत्र पर सरकार का नियंत्रण होता है, तथा निजी क्षेत्रों पर भी सरकार का कुछ नियंत्रण होता है।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अन्तर स्पष्ट कीजिए। (कोई तीन)।

उत्तर—आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अंतर—

क्र.	आर्थिक विकास	आर्थिक वृद्धि
1.	उत्पादन वृद्धि, प्राविधिक परिवर्तन, संस्थागत परिवर्तन का होना आर्थिक विकास है।	केवल उत्पादन में वृद्धि होना आर्थिक वृद्धि है।
2.	आर्थिक विकास प्रेरित असतत् प्रकृति वाला परिवर्तन है।	आर्थिक वृद्धि, स्वाभाविक क्रमिक व स्थिर गति वाला परिवर्तन है।
3.	यह अल्पविकसित एवं पिछड़े देशों की समस्याओं से सम्बन्धित होता है।	आर्थिक वृद्धि विकसित देशों की समस्याओं से सम्बन्धित होता है।
4.	यह गतिशील साम्य का एक रूप है।	यह स्थैतिक साम्य की अवस्था है।

प्रश्न 37. गरीबी रेखा क्या है ? गरीबी रेखा का निर्धारण कैसे किया जाता है ?

उत्तर—गरीबी रेखा का अर्थ दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 31 देखिए।

गरीबी रेखा का निर्धारण—उपभोग गरीबी रेखा निर्धारित करने के लिए हम एक उपयोग टोकरी निर्धारित कर सकते हैं जिसमें न्यूनतम अनिवार्य वस्तुएँ रख दें और उसका मूल्य पता करें। वैकल्पिक तौर पर दो स्तरीय प्रक्रिया को अपनाया जा सकता है। जीने के लिए भोजन महत्वपूर्ण है। अनिवार्य चीजों की न्यूनतम मात्रा में खुराक निर्धारित करें और इस खुराक की लागत की गणना हो। अब इस लागत में आय 50% और जोड़ दे जो कि गैर-भोजन चीजें, **जैसे**—कपड़े, मकान, बिजली आदि के उपभोग के लिए है, क्योंकि हम जानते हैं कि एक सभ्य समाज में कोई भी केवल भोजन के सहारे नहीं जी सकता। इसमें हम चिकित्सा खर्च को भी शामिल कर सकते हैं यदि मुफ्त चिकित्सा की व्यवस्था न हो तो। यह गरीबी की उपभोग खर्च की रेखा है जिसमें भोजन व गैर-भोजन पदार्थों को शामिल किया गया है।

अथवा

प्रश्न—गरीबी कम करने के लिए सरकारी कार्यक्रमों की समीक्षा कीजिए। (कोई छः)

उत्तर—गरीबी कम करने के सरकारी कार्यक्रम—

1. **स्वरोजगार कार्यक्रम**—गरीबी को कम करने के लिए सरकारी विभिन्न स्व-रोजगार

कार्यक्रमों जैसे—जवाहर रोजगार योजना, स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना, प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना आदि चला रही है।

2. अन्नपूर्णा योजना—1 अप्रैल, 2000 से प्रभावी इस योजना का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों, जो राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन स्कीम के तहत पेंशन प्राप्त करने के पात्र हैं लेकिन जिन्हें पेंशन नहीं मिल रही है, कि आवश्यकता को पूरा करने के लिए खाद्य सुरक्षा प्रदान करता है। वे प्रतिमाह 10 किलो खाद्यान्न नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

3. खेतिहर मजदूर बीमा योजना—1 जुलाई, 2001 से लागू इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले खेतिहर मजदूरों को बीमा सुरक्षा प्रदान करने के साथ 100 रुपये प्रतिमाह पेंशन प्रदान करता है।

4. राष्ट्रीय जननी सुरक्षा योजना—राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना, 1995 में फेरबदल कर इसका नया नाम राष्ट्रीय जननी सुरक्षा योजना 2003 कर दिया गया। योजना का उद्देश्य तीन माह की गर्भवती महिला को पंजीकरण के बाद शिशु जन्म तक सभी चिकित्सा सुविधाएँ नि:शुल्क उपलब्ध कराना तथा पुत्र के जन्म पर 500 रुपये एवं पुत्री के जन्म पर 1000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान करना है।

5. सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा योजना—14 जुलाई, 2003 से शुरू इस योजना का उद्देश्य गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले रोगों के लिए बेहतर चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु बीमा सुरक्षा प्रदान करना है।

6. महिला स्वयं सिद्ध योजना—इंदिरा महिला योजना तथा महिला समृद्धि योजना के स्थान पर संचालित महिला स्वयं सिद्ध योजना का उद्देश्य महिलाओं को स्वरोजगार के माध्यम से स्वावलम्बन प्रदान करना है।

प्रश्न 38. पर्यावरण समस्याओं के उपाय लिखिए। (कोई छ:)

उत्तर—पर्यावरण समस्याओं में सुधार करने के उपाय निम्नलिखित हैं—

1. शिक्षा एवं प्रचार—स्कूलों एवं कॉलेजों में पर्यावरण के विषय में पर्याप्त शिक्षा दी जानी चाहिए तथा जनता को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए पर्याप्त प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

2. पर्यावरण कानून—हमारे पर्यावरण की रक्षा के लिए अनेक कानून बने हैं। **उदाहरण के लिए** एक जंगली जीवन कानून है जो कि खतरे में पड़े जानवरों **जैसे**—हाथी, शेर, चीता आदि की हत्या करने वालों को सजा देता है।

3. सरकारी प्रयत्न—सरकार पर्यावरण की सुरक्षा हेतु बहुत अधिक धन खर्च करती है। पर्यावरण अनुसंधान, पर्यावरण समस्याओं पर सूचनाओं का विस्तार सरकार के द्वारा किया जाता है।

4. कर एवं अनुदान—सरकार पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली वस्तुओं पर कर लगाती है तथा पर्यावरण को सुरक्षित करने वाली संस्थाओं आदि को अनुदान देती है।

5. पुनर्चक्रीकरण—यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रयोग किये जा चुके एक संसाधन

का अनेक बार उपयोग किया जा सकता है। **उदाहरण के लिए,** समाचार पत्रों तथा कार्ड बोर्ड उद्योग में प्रयोग होने वाला कागज पुनर्चक्रीकृत कागज है।

6. प्रतिस्थापन—इसका अर्थ प्राकृतिक संसाधन की अपेक्षा एक वैकल्पिक संसाधन का उपयोग है जो कि प्रचुरता से उपलब्ध है। इससे दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है। आज पेट्रोल तथा डीजल के अनेक विकल्प हैं, जिनसे गाड़ी चलाई जाती है।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक समृद्धि की सीमाएँ लिखिए। (कोई तीन)

उत्तर—आर्थिक समृद्धि की सीमाएँ—1. आर्थिक समृद्धि की पहली सीमा कूड़ा प्राप्त करने या उसका आत्मसात करने की क्षमता है।

2. दूसरी सीमा उत्पादन के लिए साधनों की आपूर्ति करने की शक्ति है। यदि हम उसका अत्यधिक दोहन करते हैं तो उसकी उत्पादन क्षमता का विनाश होता है।

3. क्षयशील संसाधनों की सीमत उपलब्धता एक प्राकृतिक सीमा है।

4. सभी संसाधन चाहे वे क्षयशील हो या अ-क्षयशील हो सीमित है और उसकी उपलब्धता भी सीमित है।

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—दिसम्बर, 2011

कक्षा-10वीं

विषय-अर्थशास्त्र

सेट-3

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक-100**

निर्देश— (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रश्न क्रमांक 1 से 22 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं प्रत्येक पर 1 अंक आबंटित है।

(iii) प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 50-60 शब्द हैं।

(iv) प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 150-200 शब्द हैं।

निर्देश—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. आवश्यकताएँ.....होती हैं। (सीमित, अनंत, अधिक)

उत्तर—अनंत।

2. वस्तुएँ.....होती हैं। (दृश्य, अदृश्य, दोनों प्रकार की)

उत्तर—दृश्य।

3. लघु उद्योगों से बड़ी मात्रा में.....प्राप्त होता है। (रोजगार, गरीबी, कुछ भी नहीं)

उत्तर—रोजगार।

4. उत्पादन के.....साधन हैं। (4,5,6)

उत्तर—5.

5. जो किसी कीमत पर वस्तु उपलब्ध कराता है.....कहलाता है।
(विक्रेता, क्रेता उपभोक्ता)

उत्तर—विक्रेता।

6. 11वीं पंचवर्षीय योजना.....को प्रारम्भ हुई।
(1 अप्रैल, 2001; 1 अप्रैल, 2007; 1 अप्रैल, 1999)

उत्तर—1 अप्रैल, 2001.

निर्देश—सत्य/असत्य वाक्यों का चयन कीजिए—

सही उत्तर चुनकर लिखिए—

7. उपभोग, निवेश, उत्पादन आर्थिक गतिविधियाँ नहीं हैं। (सत्य/असत्य)

उत्तर—असत्य।

8. जनसंख्या वृद्धि के साथ वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग बढ़ती है। (सत्य/असत्य)

उत्तर—सत्य।

9. आय की विषमता लोगों के रहन-सहन के स्तर में अंतर का कारण है। (सत्य/असत्य)

उत्तर—सत्य।

10. चालू खाते में जमा राशियों पर बैंक ब्याज नहीं देते हैं। (सत्य/असत्य)

उत्तर—सत्य।

11. विकसित देशों के लोगों की आय कम होती है। (सत्य/असत्य)

उत्तर—असत्य।

12. क्षयशील संसाधन नवीनीकरण योग्य है। (सत्य/असत्य)

उत्तर—असत्य।

निर्देश—नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में दीजिए—

प्रश्न 13. वस्तु की इच्छा करना क्या कहलाता है ?

उत्तर—लालसा।

प्रश्न 14. श्रम को किससे अलग नहीं किया जा सकता है ?

उत्तर—श्रमिक।

प्रश्न 15. भारतीय रेलवे किस प्रकार की उत्पादन इकाई है ?

उत्तर—सार्वजनिक इकाई।

प्रश्न 16. खरीददारी का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

उत्तर—उपभोग।

प्रश्न 17. जवाहर रोजगार योजना का आरम्भ कब हुआ है ?

उत्तर—सन् 1989 में।

प्रश्न 18. वस्तु की एक इकाई को मुद्रा में व्यक्त करना क्या कहलाता है ?

उत्तर—मूल्य।

प्रश्न 19. डाकघर मासिक योजना कब प्रारम्भ हुई ?

उत्तर—सन् 1987 को।

प्रश्न 20. प्रति व्यक्ति आय को ज्ञात करने का सूत्र बताइये।

उत्तर—प्रतिव्यक्ति आय $= \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$

प्रश्न 21. सार्वजनिक व निजी क्षेत्र मिलकर कार्य करते हैं, तो अर्थव्यवस्था क्या कहलाती है ?

उत्तर—मिश्रित अर्थव्यवस्था।

प्रश्न 22. जब उपभोक्ता मनचाही वस्तु चुनता है तो उसे किस प्रकार का अधिकार कहते हैं ?

उत्तर—उपभोक्ता के चयन का अधिकार।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक आबंटित हैं। उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 23. श्रम से क्या आशय है ?

उत्तर—साधारणत: श्रम का आशय मेहनत या परिश्रम होता है। **जैसे**—कुली, मजदूर, कारीगर, ठेला चलाने वाला, घर में कार्य करने वाले सभी व्यक्ति श्रम करते हैं, किन्तु अर्थशास्त्र में श्रम शब्द का प्रयोग विशेष अर्थों में लिया जाता है। "मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक चेष्टाएँ जो धनोपार्जन के लिए की जाती है श्रम कहलाती है। अत: डॉक्टर, शिक्षक द्वारा किया गया कार्य भी श्रम कहलाता है।

अथवा

प्रश्न—भूमि से क्या आशय है ?

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 23 देखें।

प्रश्न 24. माता-"ता द्वारा बच्चों का लालन-पालन किस सेवा के अन्तर्गत आता है ? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक 23 देखें।

अथवा

प्रश्न—"सार्वजनिक वस्तुओं पर समाज का साझा स्वामित्व होता है।" समझाइये।

उत्तर—सड़कें, पार्क, टाउनहाल आदि सार्वजनिक वस्तुएँ होती हैं जिसका प्रयोग सम्पूर्ण समाज के द्वारा किया जाता है तथा वह समाज के सभी वर्ग के लोगों के लिए बिना रोकटोक के उपलब्ध होते हैं। इनका उपयोग किसी के लिए भी वर्जित नहीं होता है, सामान्यत: इसका निर्माण सरकार करती है। अत: सार्वजनिक वस्तुओं पर समाज का साझा स्वामित्व होता है।

प्रश्न 25. सड़कों के प्रकार लिखिए।

उत्तर—भारत में सड़कों को चार भागों में बाँटा गया है—

1. राष्ट्रीय राजमार्ग—राष्ट्रीय राजमार्ग देश की सबसे महत्वपूर्ण सड़कें हैं। ये देश की विभिन्न राजधानियों और निकटवर्ती देशों को भारत में जोड़ती है। वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग की कुल लम्बाई 57,737 कि.मी. है।

2. राज्य मार्ग—यह राज्यों की प्रमुख सड़कें होती हैं। ये देश के विभिन्न नगरों और राज्य की राजधानी को राज्य की प्रमुख नगरों से जोड़ती है। वर्तमान में इसकी कुल लम्बाई 1.60 लाख किमी. है।

3. जिलामार्ग—जिला मार्ग जिले की प्रमुख सड़कें होती हैं। ये एक ओर राज्य के प्रमुख सड़कों को मिलाती हैं। तो दूसरी ओर जिले के अन्य प्रमुख नगरों को जोड़ती है।

4. ग्रामीण सड़कें—ग्रामीण सड़कें गावों से जिले की सड़कों को मिलाती है तथा एक गाँव को दूसरे गाँव से जोड़ती है।

अथवा

प्रश्न—कमीशन एजेंट किसे कहते हैं ?

उत्तर—कमीशन एजेंट क्रेता और विक्रेता दोनों की ओर से काम करते हैं उन्हें अपने मेहनताने के रूप में कमीशन मिलता है। यह कमीशन कुल मूल्य का एक निश्चित प्रतिशत होता है।

प्रश्न 26. आढ़तिया व नीलाम कर्ता में अन्तर बताइये।

उत्तर—आढ़तिया व नीलाम कर्ता में अन्तर—

1. आढ़तिया दूसरों का माल अपने पास रखकर विक्रय की व्यवस्था करता है।

नीलाम कर्ता केवल विक्रेताओं की ओर उनके माल को दिखाकर खुली नीलामी द्वारा विक्रय की व्यवस्था करते हैं।

2. आढ़तिए स्वयं भुगतान करते हैं। नीलाम कर्ता कोई भुगतान नहीं करता।

अथवा

प्रश्न—'विश्व व्यापार संगठन' की स्थापना के दो उद्देश्य बताइये।

उत्तर—विश्व व्यापार संगठन की स्थापना के उद्देश्य—

1. सदस्य देशों के जीवन स्तर में सुधार लाना।
2. विश्व में उपलब्ध साधनों का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग करना।
3. वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन तथा व्यापार को प्रोत्साहित करना।
4. प्रभावी माँग में तेजी लाकर पूर्ण रोजगार की स्थिति उत्पन्न करना।
5. अविरत विकास की धारणा को स्वीकार करना।

प्रश्न 27. "खरीददारी एक आर्थिक क्रिया है।" समझाइये।

उत्तर—मई-जून, 2012 का प्रश्न क्रमांक 27 देखें।

अथवा

प्रश्न—''वस्तु-विनिमय से लेनदेन में कठिनाई होती है।" समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक 27 देखें।

प्रश्न 28. उत्पादक थोक विक्रेता व मध्यवर्ती थोक विक्रेता में अन्तर समझाइये।

उत्तर—उत्पादक थोक विक्रेता व मध्यवर्ती थोक विक्रेता में अन्तर—

क्र.	उत्पादक थोक विक्रेता	मध्यवर्ती थोक विक्रेता
1.	यह उत्पादक या निर्माता भी होता है।	यह केवल थोक विक्रेता होता है।
2.	यह केवल स्वयं के द्वारा उत्पादित या निर्मित वस्तुओं को बेचता है।	ये कई उत्पादकों तथा निर्माताओं की वस्तुएँ बेचता है।
3.	यह प्रथम विक्रेता है।	यह द्वितीय विक्रेता है।
4.	यह केवल विक्रेता है।	यह क्रेता और विक्रेता दोनों होता है।

अथवा

प्रश्न—वैधानिकता के आधार पर बाजार का वर्गीकरण कीजिए।

उत्तर—वैधानिकता के आधार पर बाजार को दो भागों में बाँटा गया है—

1. वैध बाजार—जब किसी बाजार में वस्तुओं का क्रय-विक्रय सरकार के हस्तक्षेप से किया जाता है और उपभोक्ताओं को वस्तुएँ उचित कीमत पर मिल जाती है। तो उचित बाजार कहते हैं। इसे वैध बाजार भी कहा जाता है।

2. अवैध बाजार—जब किसी वस्तु का क्रय-विक्रय सरकार द्वारा निर्धारित कीमत से कम या अधिक होता है तब उसका बाजार अवैध बाजार कहलाता है।

प्रश्न 29. सामान्य बीमे की दो विशेषताएँ बताइये।

उत्तर—सामान्य बीमा की विशेषताएँ—1. यह सामान्यत: एक वार्षिक अनुबंध होता है। यदि इसका पुनर्नवीकरण नहीं किया जाय तो वर्ष बीतने पर यह समाप्त हो जाता है।

2. बीमा व्यक्ति का अनुबंध की विषय वस्तु में बीमा योग्य हित अवश्य होना चाहिए। यह हित अनुबंध करते समय तथा हानि के समय अवश्य विद्यमान होना चाहिए।

अथवा

प्रश्न—जीवन किशोर पॉलिसी और जीवन सुकन्या पॉलिसी क्या है ?

उत्तर—यह बीमा योजनाएँ बच्चों की उच्च शिक्षा तथा भविष्य में उनके विकास की व्यवस्था के लिए की जाती है।

1. जीवन किशोर पॉलिसी—इसके अन्तर्गत सात वर्ष से अधिक आयु के बच्चों की पॉलिसी बनाई जाती है।

2. जीवन सुकन्या पॉलिसी—यह एक वर्ष से 12 की बालिकाओं के लिए विशेष बीमा योजना है। इसमें बालिकाओं की शिक्षा एवं विवाह के लिए धन की व्यवस्था पर जोर दिया जाता है।

प्रश्न 30. विकास के आधार पर अर्थव्यवस्था को विभाजित करते हुए संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

उत्तर—विकास के आधार पर अर्थव्यवस्था को दो वर्गों में बाँटा गया है विकसित और विकासशील।

विकसित देश के लोगों की आय अधिक होती है। लोगों को स्वच्छ पेयजल, अच्छे घर और परिवहन आदि उपलब्ध होता है। नियमित रोजगार एवं आय के स्त्रोत उपलब्ध होते हैं।

विकासशील देशों में लागों की आय कम होती है। उपभोग एवं जीवन-स्तर न्यून होता है, स्वच्छ पेयजल, अच्छे घर और परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होती है। कृषि इनका मुख्य रोजगार होता है। ज्यादातर लोग श्रम कार्यों में लगे होते हैं। इन देशों के लोग गरीबी, कुपोषण ओर बीमारियों से घिरे होते हैं।

अथवा

प्रश्न—प्राकृतिक कारक देश के विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं ? समझाइये।

उत्तर—किसी देश की भौगोलिक स्थिति का उसके विकास पर प्रभाव पड़ता है। देश की मिट्टी, जलवायु, वन, जल, खनिज संपदा का इसके विकास के स्वरूप पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ये साधन उसके प्राकृतिक आधार की रचना करते हैं और देश की संवृद्धि क्षमता का निर्धारण करते हैं। अच्छी भौगोलिक स्थिति, उपजाऊ मिट्टी, अच्छा मौसम, प्रचुर मात्रा में पानी, वर्षा तथा वन, खनिज, कोयला, पेट्रोलियम आदि के अच्छे भण्डार देश के विकास में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। खाड़ी देश अपने विशाल तेल भण्डारों के सहारे ही अमीर हुए हैं। बांग्लादेश और भूटान आदि में खनिज भण्डारों का नितांत अभाव है। यह नहीं मरुभूमि वाले देशों में तो मिट्टी भी उपजाऊ नहीं है। अत: जिन देशों के पास प्राकृतिक संपदा है वही अमीर भी हो गए हैं। प्रौद्योगिकी विकास के सहार प्राकृतिक संपदा हीनता पर काबू पाया जा सकता है। **जैसे**—जापान में प्राकृतिक साधन तो प्रचुरता से उपलब्ध नहीं है, फिर भी यह एक विकसित देश बन गया है।

प्रश्न 31. विकासशील देश की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—विकासशील देशों की विशेषताएँ—

1. इन देशों में अधिकांश लोगों की आय बहुत कम होती है।
2. लोगों का उपभोग और जीवन स्तर बहुत ही निम्न होता है।
3. बहुत बड़े जन समुदाय को स्वच्छ पेय जल, अच्छे घर और परिवहन सुविधाएँ सुलभ नहीं हैं।
4. इन देशों में चिकित्सा, रोजगार साधनों की कमी होती है।
5. कृषि इनका प्रमुख रोजगार है, इसी में ज्यादातर श्रम शक्ति लगी है।
6. यहाँ प्रौद्योगिकी का अभाव होता है। "छड़ी तकनीक अपनाई जाती है।

अथवा

प्रश्न—विश्व व्यापार संगठन के चार सिद्धान्त लिखिए।

उत्तर—मई-जून-2012 का प्रश्न क्रमांक-30 देखें।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घउत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर **6 अंक** आबंटित हैं। शब्द सीमा 100-150 शब्द।

प्रश्न 32. इच्छा और आवश्यकता में अन्तर बताइये।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक-32 देखें।

अथवा

प्रश्न—आवश्यकताओं की विशेषताओं को समझाइये।

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक-32 देखें।

प्रश्न 33. देश में लघु एवं बड़े उद्योगों के विकास की क्या संभावनाएँ हैं ?

उत्तर—लघु उद्योगों में देश में रोजगार के अवसरों का सृजन करने की बहुत अधिक क्षमता है। सरकार निरन्तर ऐसे उपाय करती रही है कि इन उद्योगों में उत्पादिता और रोजगार में सुधार होता रहे। बदलते हुए स्पर्धात्मक परिवेश में इन छोटे उद्योगों को भी आंतरिक और बाह्य चुनौतियों

का सामना करना होगा।

उपभोक्ता और पूँजीगत पदार्थों के उत्पादक बड़े उद्योगों के लिए भी हमारे यहाँ एक विस्तृत बाजार और आपार सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। किन्तु इस प्रतियोगिता के दौड़ में वही उद्योग बच पायेंगे जो बाजार के परिवर्तन के अनुरूप उत्पादन करने में समर्थ हों। यह तभी संभव होगा जबकि नई प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक प्रबंधन को अपनाया जाए और शोध तथा विकास के प्रयासों को बढ़ावा दिया जाए।

अथवा

प्रश्न 33. उत्पादन की क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है ? समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक-24 देखें।

प्रश्न 34. क्षेत्र के आधार पर बाजार का वर्गीकरण कीजिए।

उत्तर—क्षेत्र के आधार पर बाजार को चार भागों में बाँटा गया है—

1. स्थानीय बाजार—जब किसी वस्तु का बाजार स्थान विशेष अर्थात् किसी गाँव या शहर तक ही सीमित होता है तो उसे स्थानीय बाजार कहते हैं। शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं तथा अधिक स्थान घेरने वाली व भारी वस्तुओं का बाजार स्थानीय होता है। **जैसे**—दूध, दही, फल, सब्जी, रेत, ईंट, पत्थर आदि।

2. प्रादेशिक बाजार—जब किसी वस्तु का बाजार एक राज्य की सीमा के भीतर सीमित होता है तो उसे प्रदेशिक या प्रांतीय बाजार कहा जाता है। **जैसे**—पगड़ी का बाजार राजस्थान और पंजाब तक सीमित होता है।

3. राष्ट्रीय बाजार—जब किसी वस्तु का क्रय-विक्रय पूरे देश में अर्थात् एक देश की सीमा के भीतर किया जाता है तो उसे राष्ट्रीय बाजार कहते हैं। **जैसे**—फर्नीचर, धोती, साड़ी आदि का बाजार राष्ट्रीय होता है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय बाजार—जब किसी वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता पूरे विश्व में फैले होते हैं तो ऐसी वस्तु के बाजार को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार कहते हैं। **जैसे**—सोना, चाँदी, कपड़े आदि का बाजार अन्तर्राष्ट्रीय होता है।

अथवा

प्रश्न—बाजार की प्रमुख विशेषताओं को समझाइये।

उत्तर—बाजार की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. एक वस्तु—बाजार में एक ही प्रकार की वस्तु होनी चाहिए। **जैसे**—कपड़े का बाजार, चूड़ी का बाजार, सब्जी का बाजार, अनाज का बाजार आदि।

2. एक क्षेत्र—बाजार से आशय उस क्षेत्र विशेष से हैं जहाँ क्रेता एवं विक्रेता फैले हुए होते हैं तथा उनमें आपस में प्रतियोगिता होती है।

3. क्रेता एवं विक्रेताओं का होना—बाजार में क्रेताओं एवं विक्रेताओं दोनों का होना आवश्यक है। इनके अभाव में वस्तुओं का क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता है।

4. स्वतंत्र प्रतियोगिता—बाजार के लिए यह आवश्यक है कि सौदा करते समय किसी

प्रकार का प्रतिबंध नहीं होना चाहिए।

5. एक मूल्य—बाजार में जब क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच प्रतियोगिता होती है तब वस्तुओं के मूल्य में समान होने की प्रवृत्ति होती है।

6. बाजार का पूर्ण—बाजार में वस्तु का एक ही मूल्य हो, इसके लिए क्रेता-विक्रेता दोनों को ही बाजार का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इसके अभाव में उसे वस्तुएँ उचित मूल्य में प्राप्त होने में कठनाई होगी।

प्रश्न 35. आर्थिक विकास हेतु बीमे की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक-35 देखें।

अथवा

प्रश्न—बीमा व्यवसाय में नई प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—"छले कुछ समय से सामान्य बीमा कम्पनियों ने विशेष बीमा योजनाएँ बनाई हैं। ये व्यक्तियों के जीवन स्वास्थ्य और सम्पत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। ग्रामीण और कृषि बीमा योजनाओं द्वारा समाज के गरीब वर्गों तक अति उचित लागत पर बीमे की सुरक्षा पहुँचाई जा रही है। अब तो पशु धन, मुर्गी-पालन, मत्स्य पालन, कीट-पालन बागवानी, सिंचाई पंप, और व्यक्तिगत दुर्घटना आदि देश में व्यापक पैमाने पर उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

नव प्रवर्तित पालिसियाँ निम्नलिखित हैं—

1. बैंक कार्यालयों में आने वाले के लिए व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना।

2. चिकित्सा बीमा योजना।

3. गृह स्वामियों के लिए व्यापक बीमा योजना।

4. व्यावसायिक प्रतिरक्षा बीमा।

5. स्टॉक एक्सचैंज और संयुक्त पूँजी कम्पनियों के सदस्यों के दायित्वों और आकस्मिकताओं की बीमा योजना।

6. व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा सामाजिक सुरक्षा योजना।

प्रश्न 36. बेरोजगारी के छः प्रकारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बेरोजगारी के प्रकार—

1. चक्रीय बेरोजगारी—चक्रीय बेरोजगारी अर्थव्यवस्था में माँग के कारण उत्पन्न होती है। विकसित देशों में आर्थिक क्रियाओं में उतार-चढ़ाव का चक्र निरंतर चलते रहता है। गिरावट की दशा में माँग गिरती है तथा उत्पादन की कमी होती है तथा रोजगार का ह्रास होता है। इसे अल्पकालीन घटनाचक्र माना जाता है। उछाल या चढ़ाव आने पर घटनाचक्र समाप्त हो जाता है। इसे ही चक्रीय बेरोजगारी कहते हैं।

2. संरचनात्मक बेरोजगारी—पूँजी तथा साधनों की कमी के कारण उत्पन्न होने वाली बेरोजगारी संरचनात्मक बेरोजगारी कहलाती है।

3. छुपी/प्रछन्न बेरोजगारी—जब किसी कार्य में आवश्यकता से अधिक लोग लगे होते हैं तथा जिनकी सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है उसे छुपी/प्रछन्न बेरोजगारी कहते हैं।

4. मौसमी बेरोजगारी—जब लोगों को सालभर में पाँच-छह माह रोजगार मिलता है तथा शेष वक्त वे बेरोजगार रहते हैं तो ऐसी बेरोजगारी को मौसमी बेरोजगारी कहते हैं।

5. अल्प बेरोजगारी—जब व्यक्ति को उसकी योग्यता एवं क्षमता के स्तर से निम्न स्तर का रोजगार प्राप्त होता है तो उसे अल्प बेरोजगारी कहते हैं।

6. खुली बेरोजगारी—इसका अर्थ ऐसी स्थिति से है जबकि सक्षम शरीर के लोग काम करने को तैयार हैं लेकिन उन्हें काम नहीं मिलता है तो उसे खुली बेरोजगारी कहते हैं।

अथवा

प्रश्न—उपभोक्ता शोषण की क्या विधियाँ हैं ?

उत्तर—उपभोक्ता शोषण की विधियाँ—

1. माप में हेराफेरी—विक्रेता वस्तु के माप-तौल में कमी कर सकते हैं और वस्तु की पूरी कीमत ले सकते हैं।

2. घटिया किस्म—विक्रेता द्वारा घटिया किस्म की वस्तुएँ दी जा सकती है, जिनके उपभोग से हमें हानि भी हो सकती है।

3. अशुद्धि और मिलावट—खाद्य पदार्थों में यह आम बात है। दालों, मसालों, दूध, तेल, पेट्रोल, दवाओं आदि में हानिकारक और अखाद्य पदार्थों की मिलावट कर दी जाती है।

4. कृत्रिम अभाव—लोगों से अनुचित लाभ लेने के लिए व्यापारी माल रहते हुए भी उनका कृत्रिम अभाव पैदा कर देते हैं।

5. नकली उत्पाद—क्रीम, साबुन जैसी अनेक चीजें नकली बनाकर बाजार में चल रहे नाम से बेच दी जाती है। इन नकली चीजों की गुणवत्ता बहुत कम होती है।

6. उच्च दाम—कभी-कभी व्यापारी वस्तु की कीमत से भी अधिक दाम उपभोक्ताओं से ले लेते हैं। किसी वस्तु की माँग बढ़ने पर व्यापारी उनकी कीमत की अनावश्यक रूप से बढ़ा देते हैं।

प्रश्न 37. सार्वजनिक क्षेत्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—सार्वजनिक क्षेत्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. सरकारी स्वामित्व और नियंत्रण—सार्वजनिक उपक्रमों का स्वामित्व, नियंत्रण और नियमन तथा संचालन केन्द्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय सरकारों के हाथ में होता है।

2. सार्वजनिक हित का उद्देश्य—सार्वजनिक क्षेत्र का प्राथमिक उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं बल्कि जनसेवा भी है। ये भारतीय खाद्य निगम की भाँति लागत से भी कम दामों पर अपनी सेवाएँ सुलभ कराते समय हानि भी उठाते हैं।

3. सरकार द्वारा वित्त प्रबंध—इनके लिए वित्त का प्रबंधन सरकार के द्वारा ही किया

जाता है।

4. सार्वजनिक उत्तरदायित्व—सार्वजनिक उपक्रम अपनी कारगुजारियों के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

5. नौकरशाही प्रबंध प्रणाली—सरकार द्वारा बनाये गए अनेक नियमों आदि के अधीन संचालित इन उपक्रमों के प्रबन्ध में अफसरी नौकरशाही की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

अथवा

प्रश्न—प्रतिभा पलायन का अर्थ बताते हुए देश पर पड़ने वाले-प्रभाव को बताइये।

उत्तर—प्रतिभा पलायन का अर्थ—प्रतिभा पलायन का अर्थ ऐसी स्थिति में है, जिसमें अतिकुशल, प्रशिक्षित तथा योग्य व्यक्ति तथा व्यावसायिक एक देश से दूसरे देश में आवास तथा काम के लिए गमन करते हैं, इसमें अध्यापकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों, कम्प्यूटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी व्यवसायियों, वैज्ञानिकों, वित्तीय विशेषज्ञों आदि का अधिक सम्पन्न देशों **जैसे**—अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया आदि का प्रवासन निहित है।

प्रतिभा पलायन का देश पर प्रभाव—प्रतिभा पलायन से विकासशील देशों को अत्यधिक नुकसान होता है। ये देश इन उच्च योग्य व्यक्तियों को शिक्षा खर्चा पर अनुदान देते हैं। लेकिन उनकी आय पर कर नहीं लगा सकते। इन व्यक्तियों द्वारा घर भेजी जाने वाली रकम हानियों को देखते हुए बहुत ही महत्वहीन हैं।

एक व्यक्ति के लिए प्रतिभा अनेक तरीकों से लाभप्रद है लेकिन उसके मूल देश के लिए यह हानिप्रद है। प्रतिभा पलायन रोकने के लिए काम का अच्छा वातावरण बनाने की आवश्यकता है जिससे कि वित्तीय सुरक्षा व व्यावसायिक वृद्धि प्राप्त हो। योग्य व्यक्तियों को अच्छी तनख्वाह व भत्ते मिलने के अलावा मकान, बच्चों के अच्छे स्कूल, यात्रा भत्ता आदि सुविधाएँ मिलनी चाहिए। इसके साथ-साथ अप्रवासियों के भारत वापसी के प्रयत्न भी होने चाहिए। उन्हें उचित रोजगार दिये जायें और देश में पूँजी निवेश के लिए प्रोत्साहित किये जायें जिससे प्रतिभा पलायन की उलटा सके।

प्रश्न 38. पर्यावरण समस्याओं के सुधार के उपायों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक-38 देखिए।

अथवा

प्रश्न—वायु प्रदूषण तथा जल-प्रदूषण के तीन-तीन स्त्रोतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—वायु प्रदूषण के कारण—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक 38 देखिए।

जल प्रदूषण के कारण या स्त्रोत—

1. गन्दे नाले तथा कचरा—प्रत्येक दिन हमारे घरों में स्नान गृह और रसोईघर से गन्दे पानी का जन्म होता है। रासायनिक कारखाने, कपड़ा तथा कागज उद्योग, खाद से निकलते पानी में हानिकारक रसायन व कचरा होता है। यह कचरा व गंदा पानी नालों के जरिये नदी, झील और समुद्र में पहुँच जाता है। इस प्रदूषण से पानी की शुद्धता तथा उसमें ऑक्सीजन की कमी हो जाती

है।

2. कृषि निस्सारण—आधुनिक कृषि प्रणाली में खाद तथा कीटनाशकों के रूप में विभिन्न रसायनों के प्रयोग से ये रसायन वर्षा तथा सिंचाई के माध्यम से तालाब, झील, धारा, नदी में पहुँच जाते हैं। जिससे भूगर्भ जल पीने लायक नहीं रहता। पीने योग्य पानी में आर्सेनिक अम्ल का जहर बिहार तथा असम में आम बात है क्योंकि उसका प्रयोग वहाँ कृषि में खरपतवार नाशी के रूप में होता है। परिणामस्वरूप अस्थि विकृति, बालों तथा नाखूनों का झड़ना, चमड़ी में घाव तथा रंग बदलने जैसे रोग होते हैं।

3. गर्म तथा रेडियोधर्मी कचरा—ये प्रदूषक मुख्यत: तापीय तथा नाभिकीय बिजली-घरों से आते हैं। इन बिजलीघरों में जल की भारी मात्रा का प्रयोग होता है। प्रयोग के बाद इस जल को ऊँचे तापमान पर झील और नदी में बहा दिया जाता है। यह गर्म पानी जल जीवन का नाश करता है यह गर्मी-प्रदूषक है। ता"त प्रदूषक की तुलना में नाभिकीय बिजलीघरों द्वारा पानी में रेडियोधर्मी कचरे को छोड़ना अधिक खतरनाक है क्योंकि इससे कैंसर होता है।

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—मई-जून, 2011

कक्षा-10वीं

विषय-अर्थशास्त्र

सेट-4

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक-100**

निर्देश— (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) सभी प्रश्नों के अंक प्रश्नों के सामने अंक विभाजन के साथ अंकित हैं।

(iii) प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक बहुविकल्पीय, 6 से 10 तक खाली स्थान 11 से 16 सत्य/असत्य एवं 17 से 22 तक एक शब्द/वाक्य के प्रश्न हैं।

(iv) प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 50-60 शब्द हैं।

(v) प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 150-200 शब्द हैं।

निर्देश—सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. एक महाविद्यालय के शिक्षक के लिए कार है—

(a) सुविधा की वस्तु (b) विलासिता की वस्तु

(c) अनिवार्य वस्तु (d) कुछ भी नहीं।

उत्तर—(a) सुविधा की वस्तु।

2. उत्पादन इकाई का संगठन करता है—

(a) भू-स्वामी (b) श्रमिक

(c) पूँजीपति (d) उद्यमी।

उत्तर—(d) उद्यमी।

3. अंतिम उपभोक्ता को माल बेचने वाला कहलाता है—

(a) थोक विक्रेता (b) एजेंट

(c) खुदरा विक्रेता (d) इनमें से सभी।

उत्तर—(c) खुदरा विक्रेता।

4. वस्तुओं और सेवाओं का उपभोक्ता होता है—

(a) फर्म (b) निजी उत्पादक

(c) सार्वजनिक उत्पादक (d) परिवार।

उत्तर—(d) परिवार।

5. महिला कर्मियों का शोषण रोकने के लिए वेतन कानून बना—

(a) 1974 में (b) 1975 में
(c) 1976 में (d) 1977 में।

उत्तर—(a) 1974 में।

निर्देश—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

6. अपने संसाधनों का संरक्षण करने के लिए हमें अपनी आवश्यकताओं को.....करना चाहिए।
उत्तर—सीमित।
7. 31 मार्च, 2001 तक विश्व व्यापार संगठन के.....सदस्य हैं।
उत्तर—148.
8. आमतौर पर जोखिम भरे काम में आसान काम की अपेक्षा.....आय प्राप्त होती है।
उत्तर—अधिक।
9. बाजार माँग निश्चित कीमतों पर व्यक्तियों की माँगी गई.....है।
उत्तर—वस्तु की मात्रा।
10. बीमे की शर्तों के दस्तावेज को बीमा.....कहते हैं।
उत्तर—पॉलिसी।

निर्देश—सत्य/असत्य कथन का चयन कीजिए—

11. भोजन, आवास और वस्त्र अनिवार्य आवश्यकता नहीं है।
उत्तर—असत्य।
12. लाभ श्रमिक कमाता है।
उत्तर—असत्य।
13. ब्याज और भाड़ा सम्पत्ति से आय है।
उत्तर—सत्य।
14. बचत खाताधारियों को अधिविकर्ष की सुविधा प्राप्त है।
उत्तर—असत्य।
15. अंग्रेजों ने भारतीयों की आय सृजन क्षमता को विकसित नहीं किया।
उत्तर—सत्य।
16. गरीबी रेखा आय का स्तर है।
उत्तर—सत्य।

निर्देश—एक शब्द/एक वाक्य में उत्तर दीजिए—

प्रश्न 17. FCI का पूरा नाम लिखिए।

उत्तर—भारतीय खाद्य निगम (Food Corporation of India)।

प्रश्न 18. ईंटों का बाजार स्थानीय क्यों होता है ?

उत्तर—ईंट अधिक स्थान घेरती है तथा भारी होती है। अत: इसका बाजार स्थानीय होता है।

प्रश्न 19. भारत में आर्थिक नियोजन का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

उत्तर—राष्ट्रीय उत्पादन तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना।

प्रश्न 20. विश्व उपभोक्ता दिवस कब मनाया जाता है ?

उत्तर—15 मार्च को विश्व उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है।

प्रश्न 21. ध्वनि प्रदूषण का मात्रक क्या है ?

उत्तर—साउण्ड लेबल मीटर।

प्रश्न 22. प्राकृतिक संसाधन को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 22 देखें।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक आबंटित हैं। उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 23. लघु एवं कुटीर उद्योग का अर्थ लिखिए।

उत्तर—लघु उद्योग—वे सभी औद्योगिक इकाइयाँ जिनमें 3 करोड़ से कम की अचल पूँजी लगी है लघु उद्योग कहलाते हैं।

कुटीर उद्योग—कुटीर उद्योग आमतौर पर परिवार के सदस्यों के द्वारा उनके घर में ही संचालित किया जाता है। इसमें परिवार के अपने संसाधनों से ही जुटाई गई थोड़ी-सी पूँजी लगी होती है।

अथवा

प्रश्न—बड़े पैमाने के उद्योगों के लाभ बताइये। (कोई चार)

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 25 देखें।

प्रश्न 24. थोक और खुदरा विक्रेता में अंतर समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 26 देखिए।

अथवा

प्रश्न—''रेल परिवहन एवं सड़क परिवहन एक-दूसरे के पूरक हैं।'' समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 26 देखिए।

प्रश्न 25. माता-"ता द्वारा बच्चों का लालन-पालन किस सेवा के अंतर्गत आता है और क्यों आता है ?

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 23 देखिए।

अथवा

प्रश्न—पूँजी किस प्रकार भूमि और काम की उत्पादकता को बढ़ाती है ?

उत्तर—पूँजी के कारण उत्पादन के अन्य साधनों की कार्य कुशलता बढ़ जाती है। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए अच्छे बीज, रासायनिक उर्वरक ट्रेक्टर, नलकूप आदि की आवश्यकता होती है। इनका प्रबंध पूँजी के द्वारा किया जाता है। इसी प्रकार जब श्रमिक मशीनों और औजारों का प्रयोग करते हैं तो उनकी कार्य कुशलता बढ़ती है जिससे उत्पादन बढ़ता है।

प्रश्न 26. उत्पादन में वृद्धि का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 24 देखिए।

अथवा

प्रश्न—उत्पादन क्षमता का कैसे बढ़ाया जा सकता है ? समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 24 देखिए।

प्रश्न 27. एक काल्पनिक उदाहरण द्वारा प्रति व्यक्ति आय की गणना कीजिए।

उत्तर—एक देश की राष्ट्रीय आय 350 अरब रुपये है तथा उसकी जनसंख्या 25 करोड़ है तो प्रति व्यक्ति आय होगी—

$$\text{प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$$

$$= \frac{35,00,00,00,00,000}{25,00,00,000}$$

= 14,000 रुपये

प्रति व्यक्ति आय = 14,000 रुपये।

अथवा

प्रश्न—आर्थिक समस्याएँ क्यों पैदा होती हैं ? इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 30 देखिए।

प्रश्न 28. बेरोजगारी दूर करने के कोई चार उपाय समझाइये।

उत्तर—बेरोजगारी दूर करने के उपाय—1. जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण—बेरोजगारी की समस्या का मुख्य कारण जनसंख्या में निरंतर वृद्धि है। अत: जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण का प्रयास किया जाना चाहिए।

2. पूर्ण तथा उत्पादक रोजगार—रोजगार नीति का सर्वप्रथम प्रमुख उद्देश्य यह होना चाहिए कि आर्थिक दृष्टि से सक्रिय सभी व्यक्तियों को रोजगार मिले। जो व्यक्ति अल्प बेरोजगार है उन्हें पूर्ण रोजगार मिले।

3. पूँजी उत्पादिता में वृद्धि—भारत जैसे विकासशील देशों में पूँजी की मात्रा कम होती है। इसलिए ऐसी उत्पादन तकनीक का उपयोग करना चाहिए जो श्रम-प्रधान हो। ऐसी तकनीक के अंतर्गत पूँजी उत्पाद अनुपात कम होता है। भारत में पूँजी उत्पाद अनुपात बहुत ऊँचा है जो कम होना चाहिए।

4. स्त्रियों के लिए रोजगार अवसर—स्त्रियों को अधिकाधिक रोजगार के अवसर प्रदान करना चाहिए ऐसा करने के लिए उन्हें अधिक सुविधा देनी चाहिए, **जैसे**—शिशु, देखभाल केन्द्र, शिक्षा तथा प्रशिक्षण, कामकाजी महिलाओं के लिए आवास की व्यवस्था आदि।

अथवा

प्रश्न—लिंगानुपात क्या है ? लिंगानुपात की विधि समझाइये।

उत्तर—लिंगानुपात का अर्थ—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 37 देखें।

लिंगानुपात ज्ञात करने की विधि—लिंगानुपात को ज्ञात करने के लिए देश में स्त्रियों की कुल संख्या को पुरुषों की कुल संख्या से भाग देना चाहिए तथा भागफल में 100 का गुणा करने से लिंगानुपात ज्ञात हो जाता है।

प्रश्न 29. खरीददारी एक विनियोग है। समझाइये।

उत्तर—किसी वस्तु का उत्पादन करने के लिए कुछ वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदा जाता है अर्थात् इन वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदने के लिए उसमें पूँजी लगाई जाती है, इसे विनियोग कहते हैं क्योंकि इससे आय की प्राप्ति होती है।

उदाहरणार्थ—एक शक्कर कारखाने के लिए गन्ने, मशीन तथा बिजली की आवश्यकता होती है अत: इन्हें सर्वप्रथम क्रय किया जाता है तथा चीनी (शक्कर) का उत्पादन किया जाता है उत्पादन के पश्चात् शक्कर के विक्रय से आय की प्राप्ति होती है।

अत: हम यह कह सकते हैं कि खरीददारी विनियोग है।

अथवा

प्रश्न—गरीबों के सहायतार्थ संचालित विभिन्न कार्यक्रमों में से किन्हीं चार कार्यक्रमों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 37 देखें।

प्रश्न 30. वस्तुओं के विक्रेता और सेवाओं के विक्रेता में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—वस्तुओं के विक्रेता एवं सेवाओं के विक्रेता में अन्तर—वस्तुओं के विक्रेता और सेवाओं के विक्रेता में दो अंतर हैं।

1. सेवाओं के विक्रय में उत्पादक और उपभोक्ताओं के बीच सीधा सम्पर्क आवश्यक होता है। वस्तुओं के विक्रय में ऐसा नहीं होता है।

2. सेवाओं की परिस्थिति में कोई मध्यवर्ती विक्रेता नहीं होता है। वस्तुओं की परिस्थिति में मध्यवर्ती विक्रेता की आवश्यकता होती है। हमें वस्तुओं के थोक विक्रेता और फुटकर विक्रेता मिलते हैं, सेवाओं के नहीं।

अथवा

प्रश्न—अति अल्पकालीन एवं अल्पकालीन बाजार को समझाइये।

उत्तर—अति अल्पकालीन बाजार—अति अल्पकालीन बाजार 4-6 घण्टे का या दैनिक होता है। इसमें पूर्ति को माँग के अनुरूप घटाने-बढ़ाने का बिल्कुल समय नहीं मिलता है। ऐसे बाजार वस्तु की उपलब्ध मात्रा तक सीमित होता है।

अल्पकालीन बाजार—वह बाजार जिसमें वस्तुओं को उसके माँग के अनुरूप घटाने-बढ़ाने के लिए कुछ समय मिल जाता है उसे अल्पकालीन बाजार कहते हैं।

प्रश्न 31. भारत में उपलब्ध प्रमुख बीमा योजनाओं की व्याख्या कीजिए। (कोई चार)

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 35 देखें।

अथवा

प्रश्न—बचत की आवश्यकता क्यों होती है ? समझाइये।

उत्तर—निम्नलिखित कारणों से हमें बचत करने की आवश्यकता होती है—

1. सामान्यत: व्यक्तियों की वर्तमान आय निश्चित होती है परन्तु भविष्य में अनिश्चितता की सम्भावना बनी रहती है। इसलिए व्यक्ति अपनी वर्तमान आय का कुछ भाग भविष्य में संभावित समस्या का सामना करने के लिए अलग रख छोड़ते हैं।

2. कुछ व्यक्ति किसी निश्चित काम के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से बचत करते हैं। **जैसे**—बच्चों की शिक्षा, बुढ़ापे के लिए, मकान, कार खरीदने के लिए।

3. कुछ लोग तो भविष्य में 'निश्चित आय प्रवाह' की व्यवस्था के उद्देश्य से बचत करते हैं।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घउत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर **6 अंक** आबंटित हैं। शब्द सीमा 100-150 शब्द।

प्रश्न 32. उत्पादन, उपभोग एवं निवेश में अंतर्सम्बन्धों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 23 देखिए।

अथवा

प्रश्न—किसी वस्तु के उत्पादन में उद्यमी श्रम गहन या पूँजी गहन विधि का उपयोग किन बातों पर निर्भर करता है ? समीक्षा कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 33 देखिए।

प्रश्न 33. 'माँग के नियम' की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 34 देखिए।

अथवा

प्रश्न—'पूर्ति के नियम' की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 34 देखिए।

प्रश्न 34. आवश्यकता क्या है ? आवश्यकता के तत्व लिखिए।

उत्तर—प्रभावपूर्ण इच्छा को आवश्यकता कहते हैं। प्रभावपूर्ण इच्छा से तात्पर्य ऐसी इच्छा जिसकी पूर्ति के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन हो, तथा हम उसे त्यागने के लिए तत्पर हो।

आवश्यकता के तत्व—

1. इच्छा—इच्छा आवश्यकता का प्रथम एवं महत्वपूर्ण तत्व है। यदि हमें इच्छा नहीं होती है तो आवश्यकता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अत: मनुष्य में सर्वप्रथम वस्तु की इच्छा जाग्रत होनी चाहिए।

2. साधन—यदि हमें इच्छा होती है तो उस इच्छा की पूर्ति के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में साधन (धन) का होना आवश्यक होता है। साधन के अभाव में इच्छा की पूर्ति नहीं की जा सकती है।

3. तत्परता—इच्छा और साधन होने मात्र से आवश्यकता का जन्म नहीं होता है। आवश्यकता को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए मनुष्य में अपने साधन को त्यागने की तत्परता का होना आवश्यक है।

उपर्युक्त विवरण से यह सिद्ध हो जाता है कि आवश्यकता के लिए क्रमश: इच्छा, साधन

तथा तत्परता का होना आवश्यक है।

अथवा

प्रश्न—आवश्यकता की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 32 देखिए।

प्रश्न 35. समग्र घरेलू बचत की व्याख्या दीजिए।

उत्तर—किसी अर्थव्यवस्था में हुई कुल बचत को समग्र घरेलू बचत कहा जाता है। यह परिवारों, फर्मों तथा सरकार द्वारा की गई बचतों का योगफल होता है। इनकी बचतों की गणना निम्न प्रकार की जाती है—

(i) पारिवारिक बचत = वैयक्तिक प्रयोज्य आय – उपभोग आय

(ii) फर्मों की बचत = लाभ – (लाभांश + व्यावसायिक कर)

(iii) सरकारी बचत = चालू खाते पर सार्वजनिक राजस्व – चालू व्यय।

पारिवारिक बचतों को ही वैयक्तिक बचत या व्यक्तियों की बचत भी कहा जाता है। परिवारों और फर्मों की बचतों का योग (क्षेत्रक की) बचत कहलाती है।

निजी बचत = पारिवारिक बचत + फर्मों की बचत

सरकारी बचत को सार्वजनिक बचत भी कहते हैं।

अत: समग्र बचत = निजी बचत + सार्वजनिक बचत।

समग्र बचत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक पारिवारिक बचत होता है। भारतीय रिजर्व बैंक की करेंसी और वित्त रिपोर्ट 2001-02 के अनुसार भारत की सकल घरेलू बचत दर 24% है इसमें से

(i) पारिवारिक बचत का योगदान 22.5% है।

(ii) फर्मों का अंशदान 4.0% और

(iii) सार्वजनिक क्षेत्र का योगदान (–) 2.5% है।

अथवा

प्रश्न—बैंकों में कितने प्रकार के जमा खाते खोले जा सकते हैं ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बैंक खातों के स्वरूप—

1. बचत बैंक खाता—यह खाता अधिकांशत: निम्न तथा मध्यम आय वर्ग के लोगों या नौकरी पेशा लोगों के द्वारा खोला जाता है। यह खाता 500 रुपये की राशि बैंक में जमा करके खोला जा सकता है। इस खाते के संचालन के लिए बैंक कुछ चार्जेस काटती है तथा जमा धन पर कुछ ब्याज भी देती है।

2. चालू खाता—व्यावसायिक फर्में, कम्पनियाँ आदि यह खाता खोलते हैं। ये बड़ी नकद राशियों का लेन-देन करने के स्थान पर अपने इन खातों के चेकों द्वारा भुगतान

निपटान करती है। इन खाताधारियों को बचत खाताधारियों की अपेक्षा कुछ अधिक सुविधाएँ मिलती हैं। इन्हें अधिविकर्ष की सुविधा दी जाती है। इन खातों में कोई ब्याज बैंक के द्वारा नहीं दिया जाता है।

3. सावधिक बचत खाता—इस खाते में एक निश्चित राशि पूर्व निर्धारित अवधि तक के लिए जमा कर दी जाती है तथा परिपक्वता पर पूर्व निर्धारित ब्याज दर पर ब्याज के साथ मूलध ान को लौटाया जाता है।

4. आवर्ती जमा खाता—इन खातों में एक निश्चित अवधि तक निश्चित राशि प्रति माह जमा की जाती है। अवधि और मासिक जमा राशि का चयन जमाकर्ता खाता खोलते समय ही कर लेता है। इन पर ब्याज दर बचत खाते से अधिक तथा सावधिक खाते से कम रहती है।

प्रश्न 36. प्रदूषण क्या है ? प्रदूषण के प्रकार लिखिए।

उत्तर—प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता में अवांछित परिवर्तन ही प्रदूषण कहलाता है।

प्रदूषण के प्रकार—

1. वायु प्रदूषण—वायुमण्डल में पायी जाने वाली गैसें एक निश्चित मात्रा एवं अनुपात में होनी चाहिए। इस मात्रा एवं अनुपात में वृद्धि या कमी हो जाती है, तो यह वायु प्रदूषण कहलाता है।

2. जल प्रदूषण—ऐसे द्रव्य जिनके कारण पानी के भौतिक तथा रासायनिक लक्षणों में परिवर्तन हो जाता है और वह उपयोग योग्य नहीं रह जाता है तो उसे जल प्रदूषण कहते हैं।

3. ध्वनि प्रदूषण—शोर वह अनचाही अथवा अ'य आवाज है जिससे हमें असुविधा होती है, जिससे मानसिक परेशानियाँ होती हैं वह ध्वनि प्रदूषण कहलाता है।

अथवा

प्रश्न—धारणीय विकास का अर्थ एवं प्राकृतिक संसाधनों का धारणीय उपयोग लिखिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 38 देखिए।

प्रश्न 37. आर्थिक विकास के निर्धारक-तत्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आर्थिक विकास के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं—

1. प्राकृतिक संसाधन—किसी भी देश का आर्थिक विकास उस देश की प्राकृतिक साधनों **जैसे**—भौगोलिक स्थिति, खनिज सम्पदा, जल संसाधन, वन सम्पदा, जलवायु, धरातल की बनावट, मिट्टी आदि पर निर्भर करता है। जिस देश में ये साधन जितने अधिक होते हैं, वह देश उतना ही उन्नति व विकास कर सकता है।

2. मानवीय संसाधन—समाज के मानवीय संसाधनों की मात्रा और गुणवत्ता भी आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। अन्य बातें समान रहने पर शिक्षित और तकनीकी प्रशिक्षित जनशक्ति उच्च संवृद्धि दर की प्राप्ति में सहायक रहती है।

3. पूँजी निर्माण—यदि किसी देश में पूँजी निर्माण नहीं होता है तो देश का विकास नहीं

होता है, इसके विपरीत पूँजी निर्माण की दर अधिक है तो देश का विकास तीव्रगति से होगा। पूँजी निर्माण की दर देश की बचत दर पर निर्भर होती है।

4. तकनीकी व नवप्रवर्तन—किसी भी देश की आर्थिक विकास पर तकनीकी व नवप्रवर्तन का भी प्रभाव पड़ता है। तकनीक से तात्पर्य है—नवीन वस्तुओं का उत्पादन तथा नवप्रवर्तन से तात्पर्य-पुरानी वस्तुओं की उत्पादन की प्रक्रिया में सुधार से है।

अथवा

प्रश्न—विश्व व्यापार संगठन के प्रमुख सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 30 देखें।

प्रश्न 38. सरकार द्वारा उपभोक्ता संरक्षण के लिए किये गए उपायों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—उपभोक्ता संरक्षण के उपाय—

1. उपभोक्ताओं का प्रशिक्षण—शिक्षा बेहतर उपभोक्ता बनने में सहायक है। ये शिक्षा बच्चों को अपनी आवश्यकताओं को स्पष्टत: समय पर उपलब्ध संसाधनों के आधार पर उनकी पूर्ति के लिए उचित कदम उठाने की सीख देती है। बच्चे इस प्रकार जीवन धारण, विकास और संरक्षण के अपने अधिकार से परिचित हो जाते हैं।

2. कानूनी उपाय—सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण हेतु कुछ कानून बनाये हैं। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के अन्तर्गत जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उपभोक्ता विवाद निपटान संस्थाओं की स्थापना हुई है। राज्य और केन्द्र स्तर पर अलग से उपभोक्ता विषयों के विभाग भी बनाये गए हैं। साथ ही जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उपभोक्ता न्यायालय भी गठित किये गए हैं।

3. प्रशासकीय उपाय—इसमें अनाज और मिट्टी तेल जैसी आवश्यक वस्तुओं के सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा वितरण शामिल है। इससे व्यापारियों की जमाखोरी और मुनाफाखोरी पर अंकुश लगता है।

4. तकनीकी उपाय—इसमें उत्पादों के मानक निर्धारित किये गए हैं। सभी उत्पादकों एवं विक्रेताओं को अपने सारे माल का मानकीकरण कराने के लिए कहा जा रहा है। इस कार्य में भारत में एगमार्क और भारतीय मानक ब्यूरो जैसी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं।

अथवा

प्रश्न—11वीं पंचवर्षीय योजना के प्रमुख प्रावधानों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—11वीं पंचवर्षीय योजना 1 अप्रैल, 2001 से प्रारम्भ हुई है और यह 31 मार्च, 2012 तक चलेगी। इस योजना का मुख्य लक्ष्य सभी गाँवों में विद्युतीकरण, स्वच्छ पेय जल, साक्षरता की दर में वृद्धि, आधारिक संरचना के विकास में निजी क्षेत्र की भागीदारी है। इसके अलावा अन्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं—

1. 9% वार्षिक विकास दर को प्राप्त करना।

2. कृषि में 4% एवं उद्योग व सेवाओं में 9% से 11% की दर से वार्षिक वृद्धि।

3. बचत की दर सकल घरेलू उत्पाद के लिए 34.8% बनाये रखना है तथा निवेश की दर 36.7% तक बनाये रखना है।

4. निर्धनता अनुपात में 10% की कमी करना है।

5. रोजगार के 7 करोड़ नए अवसर सृजित करना।

6. फाइमरी में ड्रॉप आऊट दर 20% से नीचे लाना तथा साक्षरता दर को 85% तक पहुँचाना है।

7. बैंकिंग, बीमा, सिंगल ब्रांड रिटेलिंग एवं प्रसारण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की सीमा को बढ़ाता है।

8. आठ नए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) एवं सात नये भारतीय प्रबंधकीय संस्थान (IIM) स्थापना का लक्ष्य।

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

सॉल्व्ड पेपर—2010

कक्षा-10वीं

विषय-अर्थशास्त्र

सेट-5

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक-100**

निर्देश— (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) सभी प्रश्नों के अंक उनके सामने अंकित हैं।

(iii) प्रश्न क्रमांक 1 से 22 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिसमें 1 से 7 खाली स्थान, 8 से 14 सही/गलत एवं 15 से 22 तक शब्द/एक वाक्य के प्रश्न है।

(iv) प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघुउत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 50-60 शब्द हैं।

(v) प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। उत्तर की शब्द सीमा 150-200 शब्द हैं।

निर्देश—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. हमारी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए.....वस्तु एवं सेवाएँ उपलब्ध हैं। (अनेक/एक भी नहीं)

   उत्तर—अनेक।

2. दीर्घोपयोगी वस्तुओं का उपयोग.....होता है। (बार-बार/एक बार)

   उत्तर—बार-बार।

3. किसी सहकारी समिति में सदस्यों की न्यूनतम संख्या.....होती है। (10/20)

   उत्तर—10.

4. भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का.....विशालतम देश है। (पहला/दूसरा)

   उत्तर—दूसरा।

5. खरीददारी एक विशुद्ध.....क्रिया है। (आर्थिक/अनार्थिक)

   उत्तर—आर्थिक।

6. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में मूल्य प्रणाली.....भूमिका निभाती है। (महत्वपूर्ण/सीमित)

   उत्तर—महत्वपूर्ण।

7. 2001 में भारत की प्रति व्यक्ति आय.....अमेरिकी डॉलर है। (860/460)

   उत्तर—460.

निर्देश—सत्य/असत्य वाक्यों का चयन कीजिए—

8. मानवीय आवश्यकताएँ अनंत हैं। (सत्य/असत्य)
उत्तर—सत्य।

9. उत्पादन, उपभोग एवं निवेश आर्थिक गतिविधियाँ नहीं हैं। (सत्य/असत्य)
उत्तर—असत्य।

10. लघु उद्योग श्रम प्रधान होते हैं। (सत्य/असत्य)
उत्तर—सत्य।

11. वस्तु विनिमय व्यवस्था में दोहरा संयोग का होना अनिवार्य होता है। (सत्य/असत्य)
उत्तर—सत्य।

12. बीमा अनुबंध के दो पक्ष होते हैं—बीमाकर्ता एवं बीमाधारी। (सत्य/असत्य)
उत्तर—सत्य।

13. अधिक आय वाले परिवार बड़े परिवार में विश्वास रखते हैं। (सत्य/असत्य)
उत्तर—सत्य।

14. तम्बाकू के सेवन के कारण कई बीमारियाँ होती हैं। (सत्य/असत्य)
उत्तर—सत्य।

निर्देश—एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए—

प्रश्न 15. पूँजी की एक परिभाषा लिखिए।

उत्तर—पूँजी के अन्तर्गत वे सभी वस्तुएँ आती हैं जो उत्पादन करने के लिए मनुष्य द्वारा उत्पादित की जाती हैं।

प्रो. चैपमेन के अनुसार—"पूँजी वह साधन है जो आय प्रदान करती है।"

प्रश्न 16. उत्पादन के विभिन्न साधनों का स्वामी कौन होता है ?

उत्तर—साहसी।

प्रश्न 17. भारतीय अर्थव्यवस्था के घटक प्राथमिक क्षेत्र के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर—खेती बाड़ी एवं पशुपालन।

प्रश्न 18. विक्रेता किसे कहते हैं?

उत्तर—वस्तु एवं सेवाओं को बेचने वाला विक्रेता कहलाता है।

प्रश्न 19. एकाधिकारी की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—(i) एकाधिकारी अकेला उत्पादक या विक्रेता होता है।

(ii) पूर्ति पर एकाधिकारी का नियंत्रण होता है।

प्रश्न 20. डाक बचत योजना के अंतर्गत 'किसान विकास पत्र' योजना कब से प्रारम्भ हुई ?

उत्तर—अप्रैल 1988 से।

प्रश्न 21. 2001 में भारत की साक्षरता दर क्या थी?

उत्तर—65.38x।

प्रश्न 22. पुनर्चक्रीकरण क्या है?

उत्तर—पुनर्चक्रीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें प्रयोग किये गए संसाधन का पुनः अनेक बार प्रयोग किया जाता है।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक आबंटित हैं। उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 23. उपभोग किसे कहते हैं?

उत्तर—किसी आवश्यकता को पूरा या सन्तुष्ट करने के लिए, किसी वस्तु या सेवा को खरीदकर उपयोग करना उपभोग कहलाता है।

अथवा

प्रश्न—निःशुल्क वस्तु या सेवा से क्या आशय है ?

उत्तर—निःशुल्क वस्तुएँ—निःशुल्क वस्तुएँ प्रकृति द्वारा दी गई 'उपहार' है। ये प्रचुरता से उपलब्ध है। इनकी आपूर्ति माँग से बहुत अधिक होती हैं, उन्हें पाने के लिए कोई कीमत देनी नहीं पड़ती है। अतः उन्हें निःशुल्क वस्तुएँ कहा जाता है।

निःशुल्क सेवाएँ—जिन सेवाओं के लिए हमें किसी प्रकार का शुल्क नहीं चुकाना पड़ता है। उनको निःशुल्क सेवाएँ कहते हैं।

जैसे—माता-"ता का प्यार, माता-"ता द्वारा बच्चों का लालन-पालन आदि।

प्रश्न 24. उत्पादन विधियों का चयन किन-किन कारकों पर निर्भर करता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उत्पादन विधियों का चयन निम्न कारकों पर निर्भर करता है—

1. **वस्तु की प्रकृति**—कुछ वस्तुएँ केवल पूँजी गहन विधि द्वारा ही उत्पादित की जा सकती है। **जैसे**—इस्पात, बड़ी मशीनें, पोत निर्माण, बिजली आदि।

2. **श्रम और पूँजी की उपलब्धता**—यदि किसी देश में पूँजी की तुलना में श्रम अधिक मात्रा में उपलब्ध है तो यह कम कीमत पर उपलब्ध होगा। यदि श्रम की तुलना में पूँजी की उपलब्धता कम है तो उत्पादन के लिए श्रम गहन विधि अपनायी जा सकती है। यदि श्रम की अपेक्षा पूँजी सस्ती है तो पूँजी गहन विधि अपनाई जा सकती है।

3. **उद्यमी का उद्देश्य**—यदि उत्पादन इकाइयाँ निजी स्वामित्व में है तो उद्यमी लाभ देने वाली विधियाँ चुनेंगे। यदि उत्पादन इकाइयाँ राज्य यानी सरकार के स्वामित्व है तो वह उन उत्पादन विधियों को चुनेंगी जो सामाजिक दृष्टि से अधिक लाभप्रद होगी।

4. **उत्पादन का स्तर**—जब किसी वस्तु का बड़ी मात्रा में उत्पादन करना होता है तो साधारणतया पूँजी गहन विधि का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि यह विधि अधिक उत्पादन के लिए सस्ती रहती है।

अथवा

प्रश्न—उद्यमी कौन होता है? उद्यमी की कोई दो विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—उद्यमी का अर्थ—उत्पादन इकाई के व्यवस्थापक को उद्यमी कहते हैं। उद्यमी वह व्यक्ति होता है जो किसी व्यवसाय या उत्पादन इकाई को प्रारम्भ करता है। वह उत्पादन इकाई का स्वामी होता है।

उद्यमी की विशेषताएँ—

1. उद्यमी उत्पादन साधनों भूमि, श्रम और पूँजी की व्यवस्था करता है तथा उत्पादन की नीतियाँ तैयार करता है।

2. उद्यमी उत्पादन के जोखिमों को वहन करता है तथा लाभ कमाता है।

प्रश्न 25. मध्यस्थों के प्रकार लिखिए।

उत्तर—वस्तुओं की वितरण व्यवस्था के बीच की कड़ियों को मध्यस्थ कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

1. एजेण्ट मध्यस्थ (बिचौलिया)—ये क्रेता या विक्रेता के प्रतिनिधि के रूप में वस्तुओं के प्रवाह में सहायक होते हैं। इन मध्यस्थों के कई प्रकार होते हैं—

कमीशन एजेंट, दलाल, आढ़तिया, नीलामकर्ता आदि।

2. विक्रेता मध्यस्थ—इन्हें केवल विक्रेता भी कहा जा सकता है। ये सामान्यत: वस्तुओं की बिक्री का कार्य करते हैं। ये कुछ लाभ पर वस्तुओं का विक्रय करते हैं और इसमें निहित जोखिम उठाते हैं इनके दो प्रकार हैं—

(i) थोक विक्रेता

(ii) खुदरा विक्रेता

अथवा

प्रश्न—परिवहन के चार साधन लिखिए।

उत्तर—परिवहन के साधन—

1. रेल परिवहन—भारत में रेल परिवहन सबसे महत्वपूर्ण साधन है। इसे राष्ट्र की जीवन रेखा कहते हैं। भारत में प्रथम रेल 16 अप्रैल, 1953 को मुंबई और थाना के बीच तक चली थी।

2. सड़क परिवहन—सड़कें निश्चित भू-क्षेत्र के विभिन्न इलाकों को आपस में जोड़ती हैं। कारें, ट्रक, बसें और दुपहिया वाहन सड़कों पर सवारियों और माल के लिए दौड़ते दिखाई देते हैं। भारत में चार प्रकार की सड़कें पायी जाती हैं—

(i) राष्ट्रीय राजमार्ग

(ii) राज्य मार्ग

(iii) जिला मार्ग

(iv) ग्रामीण सड़कें

3. जल परिवहन—हमारी धरती का 79x भाग जल से ढका हुआ है जो जल परिवहन के अधिक उपयुक्त है। गहरी नदियों, समुद्रों में छोटे-बड़े नावों, जहाजों, स्टीमरों से परिवहन का किया जाता है। इसमें सड़क या रेलमार्ग नहीं बनानी पड़ती है। जिससे धन एवं समय की बचत होती है।

4. वायु परिवहन—यह परिवहन का अत्याधुनिक साधन है। इससे हजारों किमी की दूरी चंद घंटों में तय की जा सकती है। रॉकेट के माध्यम से आज हम दूसरे ग्रहों तक पहुँच जाते हैं। हवाई जहाज, जेट प्लेन, हैलीकॉप्टर वायु परिवहन के प्रमुख साधन हैं।

प्रश्न 26. थोक और खुदरा विक्रेता में अन्तर समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 26 देखें।

अथवा

प्रश्न—विज्ञापन के कोई चार लाभ समझाइये।

उत्तर—विज्ञापन के लाभ—

1. विज्ञापन से उपभोक्ताओं को वस्तुओं की कीमत गुणवत्ता उत्पादन-अवधि, उपभोग अवधि आदि की जानकारी होती है।

2. विज्ञापन से उत्पादन के विक्रय में निरन्तर वृद्धि होती है।

3. विज्ञापन से वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए नई बाजारों की उपलब्धता आसान हो जाती है।

4. विज्ञापन से उपभोक्ताओं को वस्तुओं के रख-रखाव तथा प्रयोग आदि बातों की जानकारी होती है।

प्रश्न 27. आय को प्रभावित करने वाले कारकों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—आय को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

1. व्यक्तियों की योग्यताओं में अन्तर—कुछ व्यक्ति अन्यों की अपेक्षा अधिक समझदार तथा कार्यकुशल होते हैं। ऐसे योग्य और कुशलकर्मी औरों से ज्यादा काम अच्छे ढंग से करते हैं और अधिक आय कमाने में सफल रहते हैं।

2. शिक्षण-प्रशिक्षण में अन्तर—सामान्यत: शिक्षित प्रशिक्षित व्यक्ति अनपढ़ और प्रशिक्षण विहीन व्यक्तियों से कहीं अधिक आय कमाते हैं। शिक्षित व्यक्तियों को रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।

3. कार्य का स्वरूप—आमतौर पर जोखिम भरे जटिल कार्यों में अधिक तथा आसान कार्यों में कम आय प्राप्त होती है।

4. गतिशीलता में कमी—गतिशीलता में कमी के कारण भी आय में अन्तर हो सकता है। कई बार श्रमिक अधिक मजदूरी वाले क्षेत्रों में जाकर काम करने के इच्छुक नहीं होते हैं।

अथवा

प्रश्न—मुद्रा स्फीति पर सरकार किन-किन माध्यमों से नियंत्रण रखती है? विश्लेषण दीजिए।

उत्तर—मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण के उपाय—

1. मौद्रिक उपाय—जब अर्थव्यवस्था में कीमत वृद्धि की संभावना होती है, भारतीय रिजर्व बैंक परिचलन में मुद्रा का परिणाम घटा देता है। इससे उपभोक्ताओं में कम उपभोग की प्रवृत्ति पनपती है—वे कम खरीददारी करते हैं। इससे बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की माँग में कमी आती है। परिणामस्वरूप कीमतें कम हो जाती हैं।

2. राजकोषीय उपाय—सरकार परिचलन में मुद्रा की मात्रा कम करने के लिए उच्च

आय वर्गों और अनेक उपभोग्य पदार्थों पर कर लगा देती है। यहाँ भी सरकार का उद्देश्य क्रय शक्ति में कमी करना रहता है।

3. सार्वजनिक वितरण व्यवस्था—यह सरकारी संस्थाओं द्वारा जनता को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करने की व्यवस्था है। यह जनता को खासकर गरीबों को खाद्य सामग्री की गारंटी देने का एक महत्वपूर्ण सरकारी प्रयास होता है। सरकार उचित मूल्य की दुकानों में कम कीमत पर खाद्य वस्तुएँ उपलब्ध कराती हैं।

4. प्रशासकीय स्तर पर कीमत निर्धारण—सरकार कुछ आवश्यक वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण करती है। अभी कुछ वर्ष पूर्व तक सीमेंट, पेट्रोल तथा रसोई गैस इसी वर्ग की वस्तु रही है। आजकल बहुत कम वस्तुएँ इस व्यवस्था के अन्तर्गत आती है। अब तो कुछ आवश्यक दवाएँ और उर्वरक आदि पर ही प्रशासकीय कीमत निर्धारण व्यवस्था लागू है।

प्रश्न 28. विक्रेताओं का वर्गीकरण कीजिए।

उत्तर—विक्रेताओं के प्रकार—

1. थोक विक्रेता—ऐसे विक्रेता जो उत्पादक से वस्तु खरीदकर फुटकर विक्रेताओं को बेचते हैं वह थोक विक्रेता कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—(i) उत्पादक थोक विक्रेता (ii) मध्यवर्ती थोक विक्रेता।

2. फुटकर विक्रेता—ये विक्रेता थोक विक्रेता से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में वस्तुएँ क्रय कर उपभोक्ताओं को बेचता है। ये दो प्रकार के होते हैं—(i) उत्पादक फुटकर विक्रेता (ii) मध्यवर्ती फुटकर विक्रेता।

अथवा

प्रश्न—क्षेत्र के आधार पर बाजार का वर्गीकरण कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर-2011 का प्रश्न क्रमांक 34 देखें।

प्रश्न 29. बचत की आवश्यकता क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्त—मई-जून-2011 का प्रश्न क्रमांक 31 देखें।

अथवा

प्रश्न—बैंकों में कितने प्रकार के खाते खोले जाते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मई-जून-2011 का प्रश्न क्रमांक 35 देखें।

प्रश्न 30. आर्थिक वृद्धि एवं विकास में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मई-जून-2012 का प्रश्न क्रमांक 36 देखें।

अथवा

प्रश्न—पेटेंट क्या है? समझाइये।

उत्तर—पेटेंट—पेटेंट सरकार द्वारा किसी आविष्कारक, अविष्कारों के एक समूह अथवा एक प्रार्थी को दिया जाने वाला एक दस्तावेज के रूप में एक अनुदान है जो कि एक नये आविष्कार को प्रकट करने के लिए दिया जाता है।

भारत में पेटेंट के अधिकार व्यापार के सम्बन्ध में (क) कृतिस्वामित्व, (ख) डिजायन, (ग) व्यापार चिन्ह, (घ) व्यापार गोपनीयता अथवा बौद्धिक सम्पदा की किसी अन्य बौद्धिक सम्पदा से सम्बन्धित है।

एक बार पेटेंट जारी होने के बाद यह अविष्कारक अथवा प्रार्थी को पेटेंट में प्रकट

अविष्कार पर पूर्ण अधिकार प्रदान करता है। वह अधिकार उस देश में मिलता है जो कि पेटेंट प्रदान करता है।

प्रश्न 31. एक काल्पनिक उदाहरण से प्रति व्यक्ति आय की गणना कीजिए।

उत्तर—मई-जून-2011 का प्रश्न क्रमांक 27 देखें।

अथवा

प्रश्न—'विश्व व्यापार संगठन' के प्रमुख उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मई-जून-2012 का प्रश्न क्रमांक 30 देखें।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घउत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर **6 अंक** आबंटित हैं। शब्द सीमा 100-150 शब्द।

प्रश्न 32. 'इच्छा और आवश्यकता' में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक 30 देखें।

अथवा

प्रश्न—मानवीय आवश्यकताओं का वर्गीकरण कर उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 32 देखें।

प्रश्न 33. देश में उत्पादन वृद्धि की आवश्यकता क्यों है? किन्हीं चार कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—देश में उत्पादन वृद्धि की आवश्यकता या कारण—

1. मूलरूप से आवश्यक वस्तुएँ—ये वे वस्तुएँ एवं सेवाएँ हैं जो कि मानव के निर्वाह के लिए आवश्यक मानी जाती है। **जैसे**—भोजन, कपड़ा और मकान।

2. सुविधाकारी एवं विलासिता सूचक वस्तुएँ एवं सेवाएँ—इन वस्तुओं से मनुष्य का जीवन और अधिक सुविधाजनक हो जाता है। गीजर, रेफ्रीजरेटर, टेलीविजन तथा एयरकंडीशन इनके प्रमुख उदाहरण हैं।

3. सार्वजनिक सुविधा सेवाएँ—इन सेवाओं की सुविधा जनता के साझे प्रयोग के लिए की जाती है। इनमें हम बिजली और पानी की आपूर्ति, शिक्षा, चिकित्सा, डाक, तार सेवाओं और परिवहन सुविधाओं को सम्मिलित कर सकते हैं।

4. जीवन स्तर में सुधार—अपना जीवन स्तर ऊपर करने के लिए भी लोग बेहतर प्रकार की वस्तुओं की माँग करने लगते हैं। इसका अर्थ यह होगा कि इन वस्तुओं का अधिक मात्रा में उत्पादन हो अर्थात् कुल उत्पादन में वृद्धि।

अथवा

प्रश्न—बड़े पैमाने के उद्योगों के पक्ष में चार तर्क दीजिए।

उत्तर—दिसम्बर 2012 का प्रश्न क्रमांक 25 देखें।

प्रश्न 34. किसी वस्तु की कीमत निर्धारित करते समय ध्यान में रखी जाने वाली बातों को समझाइये।

उत्तर—कीमत निर्धारण करते समय निम्नलिखित ध्यान रखने योग्य बातें—

1. वस्तु की उत्पादन लागत—विक्रेता वस्तु की ऐसी कीमत निश्चित करने का प्रयास करते हैं जो प्रति इकाई उत्पादन लागत से अधिक हो। वस्तु की जितनी ऊँची कीमत होगी,

विक्रेता को उतना ही अधिक लाभ होगा।

2. अन्य वस्तुओं द्वारा वस्तु की निश्चित की गई कीमतें—विक्रेता अपनी वस्तुओं की कीमतें निश्चित करते समय अन्य विक्रेताओं द्वारा उसी वस्तु या उसी प्रकार की वस्तुओं की कीमतों को ध्यान में रखते हैं। अत: विक्रेता को कीमतें निश्चित करनी होंगी जो अन्य विक्रेताओं द्वारा निश्चित की गई कीमतों से तुलनीय हों।

3. विभिन्न कीमतों पर वस्तु की संभावित बिक्री—विक्रेता कीमत निश्चित करते समय यह भी देखते हैं कि विभिन्न कीमतों पर वस्तु की कितनी मात्रा बिक सकती है।

अथवा

प्रश्न—माँग के नियम को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक 34 देखें।

प्रश्न 35. बैंक में खाता खोलने की विधि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—दिसम्बर-2012 का प्रश्न क्रमांक 35 देखें।

अथवा

प्रश्न—बीमा क्या है? किन्हीं चार बीमा योजनाओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर—बीमा का अर्थ—बीमा किसी व्यक्ति को हुई हानि की क्षतिपूर्ति का अनुबंध है।

मई-जून 2012 का प्रश्न क्रमांक 35 देखें।

प्रश्न 36. ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि लिखिए तथा इस योजना के काई चार उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—मई-जून-2011 का प्रश्न क्रमांक 38 देखें।

अथवा

प्रश्न—बेरोजगारी के प्रकार लिखिए। (कोई छः)

उत्तर—दिसम्बर 2011 का प्रश्न क्रमांक 36 देखिए।

प्रश्न 37. उपभोक्ता के अधिकारों को समझाइये।

उत्तर—उपभोक्ता का अधिकार—

1. सुरक्षा का अधिकार—उपभोक्ता की खतरनाक और जोखिम भरी चीजों से रक्षा होनी चाहिए।

2. चयन का अधिकार—उपभोक्ता के पास अनेक वस्तुओं और सेवाओं के समूह में से प्रतियोगी कीमतों पर अपना चयन करने का अधिकार है।

3. जानकारी का अधिकार—उपभोक्ता को कीमत, गुणवत्ता, मात्रा, शुद्धता आदि सभी उपर्युक्त जानकारियाँ दी जानी चाहिए।

4. सुनवाई का अधिकार—ऐसी संस्थाएँ या मंच होने चाहिए जहाँ उपभोक्ता की शिकायतों की उचित ढंग से सुनवाई हों।

5. उचित समाधान का अधिकार—उपभोक्ता की शिकायत का उचित समाधान भी होना चाहिए।

6. उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार—उपभोक्ता को वह सब ज्ञान दिया जाना चाहिए

जिससे उसके हितों का पोषण हों।

अथवा

प्रश्न—निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में अन्तर—

क्र.	निजी क्षेत्र	सार्वजनिक क्षेत्र
1.	स्वामित्व व नियंत्रण निजी हाथों में होता है।	स्वामित्व व नियंत्रण सरकार के हाथ में होता है।
2.	इनका उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना है।	इनका उद्देश्य सार्वजनिक हितार्थ होता है।
3.	वित्त प्रबंध निजी स्रोतों से किया जाता है।	वित्त प्रबंध सरकार द्वारा किया जाता है।
4.	इसमें नौकरशाही प्रणाली नहीं पायी जाती है।	यह नौकरशाही प्रबंध प्रणाली है।
5.	हानि का जोखिम निजी उद्यमों द्वारा वहन किया जाता है।	इसमें हानि सरकार द्वारा वहन किया जाता है।

प्रश्न 38. प्रदूषण क्या है? प्रदूषण के प्रमुख चार स्त्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्रदूषण शब्द का अर्थ प्राकृतिक संसाधन की गुणवत्ता में अवांछित परिवर्तन है। इस परिवर्तन से जीवन की तत्काल या दीर्घकालीन खतरा हो सकता है। अत: प्रदूषण जीवित लोगों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

वायु प्रदूषण के कारण निम्नलिखित हैं—

1. मोटर गाड़ियों से गैस की निकासी—गड़ियों के चलने से पेट्रोल तथा गैस के जलने से कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2) तथा हाइड्रोकार्बन उत्सर्जित होता है जिससे वायु प्रदूषित हो जाता है तथा साँस के माध्यम से हानि पहुँचाते हैं।

2. औद्योगिक भट्ठियाँ तथा चिमनी—कारखानों तथा बिजली परियोजनाओं से प्रयुक्त ईंधन से अनेक प्रकार की जहरीली गैसें निकलती हैं।

3. रासायनिक तथा अन्य औद्योगिक कचरा—अनेक रासायनिक उद्योग **जैसे**—अम्ल, प्लास्टिक, रंग, कागज, कीटनाशक, पेट्रो-रसायन से खतरनाक धुँआ एवं SO_2, N_2O, हाइड्रोकार्बन जैसे खतरनाक गैस निकलती है।

प्रदूषण के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित है—

1. जनसंख्या वृद्धि—जनसंख्या बढ़ने पर आवश्यकताएँ बढ़ती हैं। जिन्हें पूरा करने के लिए संसाधनों का दोहन किया जाता है। फलस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का क्षय होने लगता है।

2. औद्योगीकीकरण—पूरे विश्व में औद्योगीकरण की स्थिति है। शहर नगर, गाँव-गाँव में नये कल कारखाने, स्था"त हो रहे हैं। इनसे निकली वाली रासायनिक पदार्थ, गैसें कचरा आदि

प्रकृति को प्रदूषित बनाती है।

3. आधुनिक जीवन शैली—समय परिवर्तन के साथ-साथ लोगों की जीवन शैली में भी परिवर्तन आया है। वे अत्याधुनिक साधनों, स्कूटर, कार, ट्रक, ट्रेन आदि का उपयोग करने लगे हैं जिससे प्रदूषण में वृद्धि हुई हैं।

4. परमाणु प्रयोगादि—परमाणु शस्त्रों के परीक्षण आदि से वायुमण्डल, भूमिमण्डल, जलमण्डल विषाक्त होकर प्रदूषित होते जा रहे हैं।

अथवा

प्रश्न 38. पर्यावरणीय समस्याओं में सुधार हेतु किये जा रहे सहकारी प्रयासों को समझाइये।

उत्तर—पर्यावरण समस्याओं में सुधार करने के उपाय निम्नलिखित हैं—

1. शिक्षा एवं प्रचार—स्कूलों एवं कॉलेजों में पर्यावरण के विषय में पर्याप्त शिक्षा दी जानी चाहिए तथा जनता को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए पर्याप्त प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

2. पर्यावरण कानून—हमारे पर्यावरण की रक्षा के लिए अनेक कानून बने हैं। **उदाहरण के लिए** एक जंगली जीवन कानून है जो कि खतरे में पड़े जानवरों **जैसे**—हाथी, शेर, चीता आदि की हत्या करने वालों को सजा देता है।

3. सरकारी प्रयत्न—सरकार पर्यावरण की सुरक्षा हेतु बहुत अधिक धन खर्च करती है। पर्यावरण अनुसंधान, पर्यावरण समस्याओं पर सूचनाओं का विस्तार सरकार के द्वारा किया जाता है।

4. कर एवं अनुदान—सरकार पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली वस्तुओं पर कर लगाती है तथा पर्यावरण को सुरक्षित करने वाली संस्थाओं आदि को अनुदान देती है।

5. पुनर्चक्रीकरण—यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रयोग किये जा चुके एक संसाधन का अनेक बार उपयोग किया जा सकता है। **उदाहरण के लिए,** समाचार पत्रों तथा कार्ड बोर्ड उद्योग में प्रयोग होने वाला कागज पुनर्चक्रीकृत कागज है।

6. प्रतिस्थापन—इसका अर्थ प्राकृतिक संसाधन की अपेक्षा एक वैकल्पिक संसाधन का उपयोग है जो कि प्रचुरता से उपलब्ध है। इससे दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है। आज पेट्रोल तथा डीजल के अनेक विकल्प हैं, जिनसे गाड़ी चलाई जाती है।